

अगस्त 2014

विप्लव ₹ 10

# दादावाणी



दोषों के मूल तक जाना, वह है सामायिक।  
भीतर जो गाँठें पड़ी हुई हैं, उन्हें विलय करने  
का साधन यह सामायिक है। जो बहुत बड़ी  
ग्रंथि होती है, जो बहुत परेशान करती हो,  
वह सामायिक से विलय हो जाएगी। सिर्फ  
'देखने' से ही सभी गाँठें विलय हो जाएँगी।

विषय

क्रोध

मान

माया

लोभ

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : ९ अंक : १०

अखंड क्रमांक : १०६

अगस्त २०१४

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,  
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,  
पो.ओ.: अडालज,  
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

8155007500

**Printed & Published by**

**Dimple Mehta on behalf of  
Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

**Owned by**

**Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

**Printed at**

**Amba Offset**

Basement, Parshvanath  
Chambers, Nr.RBI,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Published at**

**Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

**Total 32 pages including cover**

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**

**१५ साल**

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

**वार्षिक**

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम  
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

निर्ग्रथ बन सकते हैं सामायिक-प्रतिक्रमण द्वारा

संपादकीय

परम पूज्य श्री दादा भगवान (दादाश्री) की कृपा से आत्मज्ञान प्राप्त होने के बाद अब बाकी क्या बचा? तो वह है, पाँच आज्ञा का पालन। वास्तव में तो आज्ञा का पालन ही सामायिक है। लेकिन पिछले हो चुके दोषों अथवा व्यवहार में उदय में आनेवाले दोषों को धोने के लिए अपने यहाँ प्रतिक्रमण-सामायिक किए जाते हैं।

आत्मारूप होने के बाद ही सामायिक में खुद के दोषों को देखा जा सकता है। अहंकार की मौजूदगी में खुद के दोष नहीं दिखाई देते। याद करने जाए तो कुछ भी याद नहीं आता जबकि सामायिक में ठेठ तक का सब दिखता है।

अपने यहाँ अक्रम में सामायिक अर्थात् और कुछ नहीं बल्कि मन में से जो स्फुरणा होती है उसके ज्ञाता-दृष्टा रहना, वही है। सामायिक ‘करना’ वह तो शब्द प्रयोग ही है। वास्तव में उसमें कर्तापन कुछ भी नहीं। यह ज्ञान क्रिया है। वास्तव में तो सामायिक में रहना है। और यहाँ अक्रम में भेद विज्ञान के प्रयोग के बाद राग-द्वेष नहीं होते, और आज्ञा पालन द्वारा पूरे दिन सामायिक रहा करती है।

शास्त्रकारों ने लिखा है कि ‘यदि एक घंटे तक जगत् विस्मृत रहे तो उसके जैसा अपार सुख अन्य किसी में नहीं है।’ क्योंकि जीव या तो भविष्यकाल की चिंता में रहता है या फिर भूतकाल में पड़ा रहता है। जबकि महात्माओं को भूतकाल विस्मृत हो गया है, भविष्यकाल ‘व्यवस्थित’ के हाथ में है, इसलिए सामायिक करते-करते वर्तमानकाल को पकड़ना आ जाता है। वर्तमान में रहना, उसी को सामायिक कहते हैं।

सामायिक में जितने दोष दिखें, उतने धुल जाते हैं। भूतकाल में रहे पर्यायों को देखना, वही अपनी सामायिक। इस ज्ञान से दोष दिखते हैं, आत्मा उपस्थित रहकर पूरी लाइफ का सभी कुछ देखता है।

भगवान ने इसीलिए सामायिक करने का कहा है, ताकि यह पता चले कि आत्मा कहाँ है, यह सामायिक तो उस वस्तु (आत्मा) को प्रत्यक्ष करना है। यह आत्मा की सामायिक कहलाती है। इसमें पुद्गल को कुछ लेना-देना नहीं है। ‘खुद’ पुद्गल का ज्ञाता-दृष्टा रहता है, यानी कि ‘यह’ तो शुद्ध उपयोग ही है।

जैसे व्यवहार में देह के लिए विटामिन लेना पड़ता है, वैसे ही आत्मा का विटामिन, यह हमारे अक्रम की सामायिक है। अब चार्ज कषाय नहीं रहे, लेकिन पहले की गाँठें बची हैं उन गाँठों को रोज सामायिक करके विलय करने का पुरुषार्थ शेष रहा। मिश्रचेतन के साथ किए हुए एक-एक दोष को याद करके आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान करवाने हैं।

‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ का भान, ही सामायिक है। समभाव से निकाल वह व्यवहार सामायिक और स्वाभाविक रूप से सहज दशा में रहना, वही निश्चय सामायिक है। निरंतर आत्म प्रवर्तना, वही सामायिक है। अब आत्मा तो प्राप्त हो गया है लेकिन अभी प्रकृति को खपाना बाकी है। वह ज्ञाता-ज्ञेय के संबंध से विलय होगी, समाप्त होगी।

यह तो शुद्ध मिलावट रहित सामायिक है, वीतरागों की सामायिक है, अहंकार रहित। इसकी तो जितनी कीमत आँकी जाए उतनी कम है। इस सामायिक से तो कैसी भी अटकण या गाँठों का छेदन करके निर्मूल कर सकते हैं। निर्ग्रथ बन सकते हैं।

प्रस्तुत संकलन में सामायिक-प्रतिक्रमण का सुंदर पृथक्करण दादाश्री के शब्दों में उपलब्ध होता है। जिसका अभ्यास, महात्माओं को गाँठों के विलय और विविध प्रकार के दोषों को समाप्त कर मोक्षमार्ग में प्रगति साधने में बहुत ही सहायक होगा, यही अभ्यर्थना। **जय सच्चिदानंद**

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

निर्ग्रथ बन सकते हैं, सामायिक-प्रतिक्रमण द्वारा

आत्मा के अनुभव से बने निज दोष  
देखनेवाला

सामायिक में आपको कितने सालों तक का दिखा?

**प्रश्नकर्ता** : पंद्रह साल तक गए होंगे लेकिन जम्पिंग (टुकड़े-टुकड़े,) था, वह सब।

**दादाश्री** : लेकिन दिखा तो सही न? मेरे कहने का मतलब है कि दिखाई दिया यानी आत्मा है, वह निश्चित हो गया न?

**प्रश्नकर्ता** : हाँ।

**दादाश्री** : और आत्मा है, ऐसा अनुभव हो गया। अब फिर अनुभव खोजने नहीं आना है। फिर भी लोग मुझसे पूछते हैं, आत्मा का अनुभव कब होगा? अरे भाई, किस चीज़ का अनुभव ढूँढ रहे हो? आत्मा का यह अनुभव तो है ही। देहाध्यास का अनुभव गया तो आत्मा का अनुभव शुरू हुआ। अब यदि अनुभव बदलना हो और देहाध्यास का अनुभव चाहिए तो फिर ‘यह कब जाएगा?’ ऐसा पूछ मुझसे। लेकिन इसकी खबर ही नहीं है। बच्चे के हाथ में पाँच अरब का हीरा दें तो बच्चा तो उससे खेलने लगेगा। कोई कहेगा, ‘ले बेटा यह बिस्किट।’ तो बदले में वह हीरा उसे दे देगा। बेर (लालच) देकर हाथ का कड़ा निकलवा लेते हैं न लोग! बच्चे को बेर देकर कड़ा निकलवा लेने हैं न? हाँ, लेकिन अब तो समझदार हो गए हैं। अब लोग पक्के हो गए हैं यहाँ आने के बाद। पक्के हो गए हैं!

अक्रम की अलौकिक सामायिक

**प्रश्नकर्ता** : दादा, आज यहाँ पर जो सामायिक की, वह बड़ी पावरफुल टेकनीक (शक्तिशाली वैज्ञानिक रीत) है, ऐसा लगा मुझे!

**दादाश्री** : पहली ही बार किया?

**प्रश्नकर्ता** : हाँ, पहली बार यह सामायिक की। अच्छा लगा! बिल्कुल शांति हो गई। बहुत सारे दोष दिखे।

**दादाश्री** : वह तो राह पर आ जाएगा। अब ऐसी सामायिक दूसरे लोग या कोई साधु-सन्यासी नहीं कर सकते। यह लौकिक सामायिक नहीं है, यह तो हमारी खोजबीन है। जैसे तो इसे सामायिक नहीं कहनी चाहिए। दूसरा कोई नाम देना चाहिए लेकिन दूसरा नाम मिलता नहीं है, इसलिए यह चलने दिया।

यह सबसे बड़ी (महत्वपूर्ण) सामायिक है। ऐसा किसी ने कभी नहीं किया होगा अड़तालीस मिनट तक! ऐसा होता नहीं है। इस दुनिया में कहीं भी नहीं होता (ऐसी है यह सामायिक)।

यह है ज्ञान क्रिया

और यह सामायिक यानी और कुछ नहीं, मन में से जो स्फूरणा हो, उसके ज्ञाता-दृष्टा रहना।

**प्रश्नकर्ता** : यह सामायिक और प्रतिक्रमण क्या क्रिया कहलाते हैं?

**दादाश्री :** नहीं, सामायिक-प्रतिक्रमण क्रिया नहीं है। यह ज्ञान क्रिया है। अज्ञान से जो किया जाता है वह अज्ञान क्रिया है जबकि अपनी तो यह ज्ञान क्रिया है। ज्ञान क्रिया से छूटता है और अज्ञान क्रिया का तो फल आता है, भौतिक सुख मिलते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन मैं तो उसे क्रिया समझता था।

**दादाश्री :** नहीं, यह तो ज्ञान क्रिया है। वास्तव में ज्ञान क्रिया को क्रिया नहीं कही जाती। व्यवहार में कहना पड़ता है कि 'मैं सामायिक कर रहा हूँ।'

सामायिक 'करनी है' वह तो बस 'करनी है' शब्द बोलते हैं इतना ही। वैसे तो सामायिक में ही रहना चाहिए। यह तो पहले की आदत पड़ चुकी है न शब्द बोलने की, इसलिए ऐसा बोलना पड़ता है। भाषा बन चुकी है न कि सामायिक करनी है, बाकी सामायिक में तो रहना है। करना है तो है ही नहीं न अपने यहाँ!

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक में खुद की भूलों को प्रयत्न करके देखना चाहिए? सामायिक में तो प्रयत्न करना पड़ता है न?

**दादाश्री :** नहीं, प्रयत्न का मतलब तो मन को क्रिया में ले जाना। मन को क्रियाशील करना, वह प्रयत्न है, जबकि 'देखना', वह क्रिया में नहीं आता। (अपने यहाँ सामायिक में) पहले जो भूलें नहीं दिखती थीं, वही भूलें अब दिखती हैं। वह ज्ञान के प्रताप से दिखती है!

### देखनेवाला आत्मा है, स्मृति नहीं

सामायिक यानी समता में रहना। राग-द्वेष नहीं होने देना। ऐसा तो आपको पूरे दिन रहता ही है न! वही तो पूरे दिन आपकी सामायिक है। राग-द्वेष तो आपको होते नहीं हैं। इसलिए आपको पूरे दिन, हर दिन सामायिक ही रहती है।

और यह तो आपने जब अंदर देखा, उस घड़ी आत्मा कैसा हो गया! उसकी कितनी शक्ति है! उस समय नहीं थे चंदूभाई, नहीं थे किसी के पति, नहीं थे किसी के कुछ, तभी सब दिखा। वर्ना पति बनकर, भला अंधा देखेगा क्या बाहर? उसके लिए तो फुल लाइट (पूर्ण प्रकाश) चाहिए।

अगर याद करने जाएँ तो उनमें से एक भी पर्याय याद न आए जबकि इसमें (सामायिक में) तो सब पर्याय देखे न! वर्ना स्मृति तो इतनी जल्दी देख ही नहीं पाती। यह तो, बचपन में ऐसा हुआ था, बाद में कुछ बड़े होने पर ऐसा हुआ था, फिर किसी उम्र तक ऐसा हुआ था, दिखाता ही जाता है।

### फर्क, साक्षीभाव और ज्ञाता-दृष्टा में

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, वह तो पहले भी दिखता था इस तरह। यह तो अभी ज्ञान प्राप्त किया है लेकिन ज्ञान लेने से पहले भी इस तरह दिखाई देती थीं खुद की भूलें।

**दादाश्री :** वे दिख, ही नहीं सकती न! उसे देखा नहीं कह सकते। विह तो साक्षीभाव कहलाता है। अहंकार की मौजूदगी में कभी भी कोई चीज़ दिख ही नहीं सकती। वह साक्षीभाव होता है। जो कुछ भी हुआ हम उसके साक्षी के तौर पर रह सकते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यहाँ आप साक्षीभाव और ज्ञाता-दृष्टा भाव में भेद की बात कर रहे हो न?

**दादाश्री :** नहीं भेद की बात नहीं है। साक्षीभाव, वह तो कुछ लोगों को थोड़ी ठंडक रहती है, इसलिए साक्षीभाव में रह पाते हैं। वह प्रेक्टिकल (जिसे कर सकें ऐसा) है। और अहंकार के कारण साक्षीभाव रहता है। ज्ञानी से आत्मा प्राप्त किए बगैर कुछ भी कहना, कि 'मेरे पास कुछ था', ऐसा बोलनेवाले की सबसे बड़ी भूल है। कुछ था ही नहीं। कहाँ से लाए आप? अहंकार था, और क्या

था? और अहंकार, व्हेअर देअर इज़ इगोइज़म, देअर इज़ नथिंग (जहाँ अहंकार है, वहाँ कुछ भी नहीं है)!

वैसे तो अगर दोषों को याद करने जाएँ, तो उनमें से कुछ भी याद नहीं आता और सामायिक में सब अपने आप ही दिखाई देता है। इतने सारे दोष आपको दिखते हैं कि बात न पूछो। आज तक जो भी हुए होंगे वो सभी दिखाई देंगे। यों ही कोई साधारण सा मानसिक दोष हो गया होगा तो वह भी आपको दिखेगा।

**प्रश्नकर्ता:** जिसका ध्यान भी नहीं हो और भूल गए हों, वह भी दिखाई देते हैं क्या?

**दादाश्री:** जिन्हें भूल गए हैं वे सभी दिखाई देंगे और जो दिखाई दिए वो चले गए। अर्थात् शरीर शुद्ध हो गया। जितना दिखें उतने गए, वे वापस नहीं आएँगे। उन्हें देखनेवाला ज्ञाता-दृष्टा आत्मा है। यह आत्मा दिखा! अर्थात् इसे देखनेवाला वह, ज्ञाता-दृष्टा आत्मा था। अर्थात् आत्मा आपको देखता है कि आप क्या काम कर रहे हो।

### आत्मा समझ में आता है सामायिक में

अब यह जो देखनेवाला है, वह आत्मा है। अन्य कोई इस चीज़ को देख ही नहीं सकता। भगवान ने सामायिक के लिए इसलिए कहा है कि सामायिक करने से तो वह जान पाएगा कि आत्मा कहाँ है। क्योंकि इसमें यादशक्ति काम नहीं कर सकती, इसमें बुद्धि से काम कर सके, ऐसा भी नहीं है। वहाँ पर तो आत्मा का ही काम है। आपको लगा है न ऐसा?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ऐसा लगा, दादा।

**दादाश्री :** कल्याण हो गया यह तो पूरा।

**प्रश्नकर्ता :** स्वप्न में भी याद नहीं आए ऐसा सब, कल्पना भी नहीं कर सकें ऐसा, अकल्प्य याद आता है!

**दादाश्री :** हाँ, वह दिखता ही रहता है। इसे कुरेदना नहीं पड़ता। अपने आप चलता ही रहता है और ढूँढ ही निकालता है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, लेकिन उसमें क्रमबद्धता नहीं है। वह भी अक्रम जैसा ही है क्या?

**दादाश्री :** हाँ, वह अक्रम जैसा ही है। समय-वमय कुछ नहीं। यहाँ सामायिक में तो जितने दोष देखे, उतने दिखेंगे। फिर आप व्यवहार में जो ये भूलें होती हैं उन्हें अंदर देखते हो, तो वे भी मिट जाती हैं। क्योंकि यह पुरुषार्थ करना कहलाता है। पुरुषार्थ आप जब चाहो तब कर सकते हो अब। ऐसे छोटे-बड़े सभी दिखाई दिए न? जबकि अज्ञान दशा में एक भी नहीं दिखाई देती है।

### जो दिखता है, वह यादशक्ति के आधार पर नहीं

तुझे याद करना पड़ता है या अपने आप आता है?

**प्रश्नकर्ता :** अपने आप ही।

**दादाश्री :** इसे भी अपने आप ही आता है। याद करने से नहीं। याद करने जैसी जागृति नहीं है न?

पिछला जो कुछ आपको दिखता है न, वह यादशक्ति के आधार पर नहीं है बल्कि देखने के आधार पर है। विचार जो आया, वह किसकी परिस्थिति है उसे आप देख सकते हो। वह यादशक्ति नहीं है। आपने कभी सामायिक की थी यहाँ पर? कुछ दिखता था क्या?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** वह यादशक्ति नहीं है। याद आना, वह तो रिलेटिव है। उसे भूल भी सकते हैं। जब आत्मा प्रकट होता है तो इस तरह से दिखेगा ही अंदर। जितना दिखता है, उतना केवलज्ञान प्रकट होता है, दिखाई देते, देते.....

## दादावाणी

### भिन्नता, दर्शन और यादशक्ति में

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् यह जो दिखाई दिए, क्या उसे चित्र मानें? द्रश्य मानें, स्मृति नहीं?

**दादाश्री :** स्मृति नहीं। वे द्रश्य हैं और हम दृष्टा हैं। जितने द्रश्य दिखाई दिए उतने दिखेंगे। जैसे-जैसे आवरण टूटते जाएँगे, वैसे-वैसे द्रश्य दिखते जाएँगे।

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा, मुझे जब वे द्रश्य दिखाई दिए तब मन में ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरा इतना विस्मृत हो गया तो क्या यह ठीक है?

**दादाश्री :** वे दिखाई दिए इसलिए आप दृष्टा थे। आपको पक्का हो गया यह। यादशक्ति अलग चीज़ है और दर्शन, वह अलग चीज़ है। दर्शन से द्रश्य दिखाई देते हैं। यादशक्ति से (हो तो) भूल जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** दर्शन और याद के बीच का भेद समझ में नहीं आता।

**दादाश्री :** दर्शन जो है, वह हमें इस तरह देखने से एक्ज़ेक्टली (हूबहू) दिखता है। जबकि यादशक्ति तो कैसी है कि अंदर याद रहे या न भी रहे ऐसा सब है। और उसमें यह भौतिक तत्व काम कर रहा है, याद रहा उसमें।

### अब रहा सिर्फ वर्तमान

**प्रश्नकर्ता :** ये जो द्रश्य दिख रहे हैं तो क्या भूतकाल खत्म हो रहा है?

**दादाश्री :** अब भूतकाल तो रहा ही नहीं न! भूतकाल रहा नहीं और भविष्यकाल भी नहीं रहा। भूतकाल था वह गॉन, गॉन फॉर एवर (हमेशा के लिए गया) और भविष्यकाल व्यवस्थित के अधीन है। इसलिए आपको वर्तमान में रहना है। जब कभी भी वर्तमान में रहना है। ये सब (महात्मा) ज्ञान में

(हैं), इसलिए वर्तमान में रहते हैं। भविष्यकाल में नहीं खो जाते। भूतकाल के लिए झंझट नहीं करते, वर्तमान में ही रहते हैं।

### जगत् विस्मृत, सामायिक में

**प्रश्नकर्ता :** दादा, इस सामायिक में कोई सांसारिक विचार नहीं, कुछ भी नहीं, निर्विचार दशा और भीतर आनंद का अनुभव हुआ, यह कौन सी स्थिति कहलाएगी?

**दादाश्री :** वही है आत्मा का अनुभव और इसी को सामायिक कहते हैं। संसार बिल्कुल विस्मृत रहे। कर्तापनवाला भाग छूट जाता है। अतः शुद्धात्मावाला भाग तो है ही, वह तय हो गया। और इस प्रकार के अभ्यास से बहुत आगे बढ़ जाता है, बाद में।

शास्त्रकारों ने क्या लिखा है कि 'एक घंटा भी अगर जगत् विस्मृत रहे तो उसके जैसा अपार सुख और कोई नहीं।' लेकिन यह जगत् विस्मृत नहीं हो पाता। जिसे भूल जाना है वही याद आता है। जिसे भूल जाना हो न, वही पहले याद आता है। इसलिए ये लोग सामायिक करने बैठते हैं। सामायिक यानी अड़तालीस मिनट के लिए पूरे जगत् को विस्मृत करने के लिए प्रयत्न करने जाता है। वह जब दुकान को भुलाना चाहे तब दुकान (याद आती है)! सबसे पहले वही आ धमकती है अंदर। उसके बाद जगत् विस्मृत नहीं हो पाता। एक घंटे तक भी यदि विस्मृत हो सके न तो दुःख कम हो जाए। जबकि यहाँ तो निरंतर विस्मृत रहता है। क्योंकि जहाँ एक की स्मृति वहाँ दूसरे की विस्मृति रहे। एक (आत्मा) की स्मृति तो दूसरे (संसार) की विस्मृति। यानी वह (आत्मा) स्मृति में आ गया, यह (संसार) विस्मृत हो गया हमें। विस्मृत रहता है, इसीलिए आनंद रहता है न!

उसका कारण यह है कि जो पिछले क्षण में,

पाँच मिनट पहले जो है न, वह अपना पाँच लाख का बीज जल गया। लेकिन वह तो भूतकाल हो गया न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** भूतकाल गया। भूतकाल को कौन बार-बार उखाड़ेगा? कोई मूरख भी नहीं उखाड़ेगा। मूरख भी उखाड़ेगा क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** तब क्या ज्योतिष उखाड़ेगा?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, क्यों उखाड़ेगा?

**दादाश्री :** यदि ज्योतिष से कहें कि पहले का निकाल ज़रा। तब कहेगा नहीं, पहले का ज्योतिष नहीं देखना चाहिए, भूतकाल का। भविष्यकाल का ज्योतिष देखना चाहिए। जबकि भविष्यकाल तो व्यवस्थित के अधीन है।

**वर्तमान में रहे वही सामायिक**

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन हर क्षण में वर्तमान-भूतकाल तो रहता ही है, दादाजी।

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन उस (क्षण का) वर्तमान किसे कहेंगे? कि बोलने से पहले ही वह भूतकाल हो चुका होता है। वर्तमान यानी बाहर जो उत्पन्न होता है, उसी में रहती वह परिणति। अर्थात् (हर एक क्षण में) बोल (शब्द), बोलने से पहले तो वह भूतकाल बन चुका होता है। (एक क्षण बाद के) भविष्यकाल को बताने से पहले तो वह वर्तमानकाल बन चुका होता है। इसलिए वर्तमानकाल को पकड़ते हैं सब। पकड़ना आता है न महात्माओं को थोड़ा बहुत। सभी महात्माओं को पकड़ना आता है। वर्तमान में रहते हैं काफी कुछ। कभी-कभी थोड़ा आगे पीछे हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** 'वर्तमान में रहना' इसका अर्थ क्या है?

**दादाश्री :** वर्तमान में रहने का अर्थ है, जिस

समय चाय पी रहे हों, उस घड़ी चाय पीनी, यों टेस्ट से! वही वर्तमान कहलाता है। भोजन करते समय भोजन करना टेस्ट से।

**प्रश्नकर्ता :** भोजन के लिए बताया, चाय-पानी, और क्या?

**दादाश्री :** सबकुछ टेस्ट से करना।

**प्रश्नकर्ता :** सब टेस्ट से ही होता है, दादा। बिना टेस्ट के चाय नहीं पीता। चाय यदि टेस्टी हो तभी पीता है। अगर शक्कर कम हो अथवा चीनी कम हो फिर भी कईबार लेता नहीं है।

**दादाश्री :** नहीं! अगर कम हो तो उसे भी जानो फिर, लेकिन टेस्ट से। न भाए तो (चीनी) डालो। उसे टेस्टी बनाकर पीओ। ज़रूरत पड़े तो कहो। यदि कहा जा सके वैसा न हो तो यों ही डाल दो, अपने घर की डाल दो। घर की डालनी हो तो डाली जा सकती है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** अर्थात् वर्तमान में रहना, वही सामायिक कहलाती है। सारे पर्याय दिखें, वही निरंतर सामायिक है।

**वर्तमान में रहो, ज्ञान द्वारा**

**प्रश्नकर्ता :** वर्तमान में रहना अर्थात् हम अभी सत्संग में बैठे हुए हैं। अब यहाँ सत्संग में सभी सौ-पचास लोग जो बैठे हुए हैं, उन सभी की परिणतियाँ (परिणत होनेवाली अवस्थाएँ) और विचार अलग-अलग हैं न? अंदर सोच चल रही होती है सभी की। कोई सामायिक कर रहा होता है, कोई प्रतिक्रमण कर रहा होता है, कोई (भक्ति) पद गा रहा होता है, कोई कुछ सोच रहा होता है, तो इसे क्या समझें हम?

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन जो पद गा रहा होता है न, वह अन्य किसी में नहीं होता।



## दादावाणी

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यदि ऐसा विचार आ जाए कि मुझे प्रतिक्रमण करना है, तो? अगर उसे ऐसा भाव हुआ, मन में ऐसा हुआ कि मुझे प्रतिक्रमण करना है तो क्या नहीं करना चाहिए?

**दादाश्री :** उसमें हर्ज नहीं। लेकिन जब पद गा रहा होता है, तब अन्य किसी में नहीं होता। प्रतिक्रमण कर रहा हो, उसे करने दो। ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन वस्तु स्थिति में तो अगर प्रतिक्रमण करे तो भी अच्छा है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अगर उसका भाव और उस तरफ का खिंचाव ज़्यादा होगा तो कहेगा, मुझे प्रतिक्रमण ही करने हैं अथवा फिर मुझे सामायिक करनी है। तो क्या नहीं करना चाहिए?

**दादाश्री :** कर सकते हैं, करनी चाहिए। प्रतिक्रमण और सामायिक तो करने चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** तो उसे वर्तमान में रहे, ऐसा कहा जाएगा या नहीं?

**दादाश्री :** वह तो अपनी दवाई है ही न! इलाज (दवाई) तो करना ही पड़ेगा न! लेकिन इसके अलावा वर्तमान में रहना है। प्रतिक्रमण तो करना ही चाहिए। यदि हमें कोई अड़चन (मुश्किल) आ जाए तो करना ही पड़ेगा न! वर्तमान किसे कहते हैं? पद (भजन) गाते हो न, उस समय आप वर्तमान में हो, ऐसा निश्चित हो गया।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वह कोई बाहर का खिंचाव हो तो अलग बात है, तो उसे यहाँ रहना चाहिए। लेकिन वह खुद यदि अपने आप में ही रहे हो तो क्या होगा?

**दादाश्री :** यदि प्रतिक्रमण करना हो तो कर सकता है। प्रतिक्रमण-सामायिक में बैठे तो सबकुछ किया जा सकता है।

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण करना, सामायिक

करना, वह सब वर्तमान में रहना ही माना जाएगा क्या?

**दादाश्री :** उसे वर्तमान ही माना जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** भले ही फिर पद गाए जा रहे हों!

**दादाश्री :** नहीं, पद गाए जाएँ ऐसा नहीं, अंदर आपकी जो परिणति आई न, उसी अनुसार परिणति में रहे, उसी में प्रतिक्रमण करे तो वर्तमान ही माना जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** वह (पद) खींच ले जाए तो? वह पद में चला जाए तो क्या पद नहीं गा सकते?

**दादाश्री :** नहीं, पद में खिंच नहीं जाना है। वर्तमान कहने का भावार्थ ऐसा है कि जो पद में रह रहा है, वह तो वर्तमान में है ही। और दूसरा जो प्रतिक्रमण में है, वह भी वर्तमान में है। और कुछ चीज़ों में भी वर्तमान में है। लेकिन जब अन्य किसी और जगह पर खो जाए तब भूल हो जाती है। अतः 'वर्तमान में' वह सबसे बड़ी चीज़ है। वर्तमान! क्योंकि भविष्यकाल का झंझट ही नहीं है न! भविष्यकाल व्यवस्थित के अधीन है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वह तो व्यवस्थित के ताबे ही है।

**दादाश्री :** तो फिर प्रतिक्रमण (करने हों) तो फिर उसकी तो छूट है ही न! प्रतिक्रमण तो करना ही पड़े। प्रतिक्रमण तो सबको करने ही पड़ेंगे। लेकिन असीम जय जयकार करते समय प्रतिक्रमण-व्रतिक्रमण सभी छोड़ देना चाहिए। क्योंकि उस समय पापों का नाश होता है, पाप भस्मीभूत होते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार,' गवाए तो वह भी वर्तमान ही हुआ न?

**दादाश्री :** नहीं, वर्तमान का सवाल नहीं है। वर्तमान नहीं। इसमें जो है वह, आप वर्तमान में इस



## दादावाणी

तरह प्रतिक्रमण को लो तो चलेगा। लेकिन जब (असीम जय-जयकार) बुलवाते समय प्रतिक्रमण अथवा और कुछ भी नहीं करना है।

**प्रश्नकर्ता :** क्या उस वक्त ज्ञानीपुरुष की वाणी वाहर निकलती हैं ?

**दादाश्री :** हाँ, उस समय तो क्या करना है ? तन्मयाकार, इसे बोलना शुरू ही कर देना है। सारे पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। परिणति परमानंद में आ जाती है और यह चित्त दादा में अभेद हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** इस तरह अभेदता आ जाती है क्या उस वक्त ?

**दादाश्री :** हाँ, अभेदता आ जाती है। इसलिए तो उसका बहुत ही फल है। यद्यपि यह तो साधारण बातें हैं। अपने यहाँ कितने ही लोग ऐसे हैं न, जो गाते ही नहीं हैं। उन्हें देखता हूँ मैं, बैठे रहते हैं। उन्हें गाना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** गाएँगे तो एकरूपता हो जाएगी न उसकी ? एकरूपता होने से एक तार में बंधते हैं न ?

**दादाश्री :** वर्ना प्रतिक्रमण करने की तो सभी को छूट हैं। कभी भी, एट एनी टाइम। लेकिन सिर्फ कौन से टाइम पर नहीं ? जब मैं 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' बुलवाता हूँ उस टाइम पर नहीं। उस समय कुछ भी नहीं करना चाहिए। इसलिए मैं कहता हूँ न, मुँह में से पान निकाल दो।

**वर्तमान में रहना, वही अमरपद**

**प्रश्नकर्ता :** भूत और भविष्य को भूल जाना है ?

**दादाश्री :** नहीं, भूल नहीं जाना है, वर्तमान में ही रहना है। भूलना, वह तो बोझा कहलाएगा। भूलने से भुलाया नहीं जा सकता और जिसे भूलने

जाएँ वह और अधिक याद आता है। एक व्यक्ति मुझसे कह रहा था कि मैं जब सामायिक करने बैठता हूँ तब सोचता हूँ कि 'दुकान आज याद नहीं आनी चाहिए।' उस दिन सामायिक में सबसे पहला धमाका दुकान का ही होता है! ऐसा किसलिए होता है ? क्योंकि दुकान का तिरस्कार किया न कि दुकान याद नहीं आनी चाहिए। हमें तो किसी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। वर्तमान में रहना, वही एक बात है। भूतकाल और भविष्यकाल के साथ हमारा लेना भी नहीं है और देना भी नहीं है। सिर्फ वर्तमान में ही रहे, वही अमरपद। हम वर्तमान में ऐसे के ऐसे ही रहते हैं। रात को उठाओ तब भी ऐसे और दिन में उठाओ तब भी ऐसे ही। जब देखो तब ऐसे के ऐसे ही रहते हैं।

हममें और आपमें फर्क कितना ? हमने काल को वश में किया है। लोगों को तो काल खा जाता है। आपको काल को वश करना बाकी है। काल वश में कैसे आता है ? भूतकाल विस्मृत हो गया, भविष्यकाल 'व्यवस्थित' के हाथ में है, इसलिए वर्तमान में रहो। तब काल वश में होगा। अपनी 'अक्रम' की सामायिक करते-करते वर्तमानकाल को पकड़ना आ जाता है। ऐसे सीधा-सीधा नहीं आ जाता। आप एक घंटे सामायिक में बैठते हो तब वर्तमान में ही रहते हो!

वर्तमान में रहना अर्थात् क्या ? अभी यदि आप हिसाब लिख रहे हों तो बिल्कुल एकज्जेक्ट उसी में रहते हो न ? उस समय भविष्य में जाओ तो हिसाब में भूल हो जाएगी। वर्तमान में ही रहे तो एक भी भूल नहीं होगी, ऐसा है। हिसाब लिख रहे हो तो वह एकाग्र चित्त से लिखो और गालियाँ दे रहे हो तो गालियाँ भी एकाग्र चित्त से दो। वर्तमान में बरते सदा, वे ज्ञानी। लोग भविष्य की चिंता को लेकर और भूतकाल को लेकर वर्तमान नहीं भोग सकते और हिसाब में भूल कर देते हैं। 'ज्ञानीपुरुष'

वर्तमान नहीं बिगाड़ते। 'प्राप्त वर्तमान को भोगो,' ऐसा मैं कहता हूँ। भूतकाल तो चला गया। भूतकाल को तो ये बुद्धिशाली भी नहीं उखाड़ते। और भविष्य का विचार करे, वह अग्रशोच है, इसलिए वर्तमान में रहो। वर्तमान में सत्संग होता है तो वह एकाग्र चित्त से सुनना चाहिए।

### दोष दिखाई दिए यानी गए

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यह सामायिक की, उसमें दोष दिखाई दिए, कुछ दर्शन में आए, सिर्फ विज्ञान में ही दिखे, लेकिन बाद में पता नहीं चलता, समझ में नहीं आता कि यह सब क्या है।

**दादाश्री :** उसे हमें देखना है, क्या है ऐसा जानना नहीं है। लेकिन विज्ञान में दिखे तो सही न! बगैर फिल्म के दिखे न? दिखाई दिए अर्थात् वे ज्ञेय हैं और हम ज्ञाता हैं।

**प्रश्नकर्ता :** उसका अर्थ क्या है कि कौन से दोषों का हैं? उसका कुछ पता नहीं चला।

**दादाश्री :** जितने भी वे दोष दिखाई दिए उतने गए। अभी भी अंदर दूसरे बैठे हुए हैं जब उन्हें निकालेगा तब निकलेंगे सब। अभी भी छोटे-छोटे बचे हुए होंगे, वह जब दुबारा सामायिक करोगे ऐसे, तब चले जाएँगे।

### सामायिक में हो जाता है प्रत्यक्ष, निर्मल आत्मा

यह आपको सामायिक का लाभ मिल गया क्योंकि कि यह सामायिक तो आत्मसामायिक कहलाती है।

और अपनी यह सामायिक तो उस चीज़ को, आत्मा को प्रत्यक्ष करना है। वह है आत्मा की सामायिक। इसमें पुद्गल (जो पूरण-गलन होता है) को लेना-देना नहीं है। पुद्गल के साथ लेना-देना

नहीं है। पुद्गल का ज्ञाता रहकर काम करे, ऐसी यह सामायिक है।

जब मूल शुद्धात्मा का स्पष्टीकरण होता है, उस घड़ी स्पष्टवेदन होता है। निर्मल (आत्मा) तो दिया हुआ है ही, लेकिन ये जो पिछले कर्म हैं न, वे उस पर आवरण लाते हैं। तो उन्हें ऐसे देखें तो निकल जाएँगे फिर। इसलिए जब भी सामायिक करनी हो तो ऐसे करना। वास्तव में यह सामायिक नहीं है, यह तो शुद्ध उपयोग है सिर्फ। लेकिन हम व्यवहार में सामायिक कहते हैं। बाहर लोग शुद्ध उपयोग को समझ नहीं पाएँगे इसलिए हम इसे सामायिक कहते हैं।

### इसे कहते हैं सामायिक-प्रतिक्रमण

**प्रश्नकर्ता :** अपने यहाँ सिर्फ सामायिक करने से दोष धुल जाते हैं या प्रतिक्रमण करना पड़ता है?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण करना पड़ता है। यह सामायिक-प्रतिक्रमण कहलाता है। सामायिक यानी बाहर का व्यवहार बंद और प्रतिक्रमण यानी भीतर का शुरू। दाग दिखते जाएँ और हम प्रतिक्रमण करते जाएँ।

'देखते रहना,' वह सामायिक कहलाता है और यह सामायिक-प्रतिक्रमण कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक से शुद्ध हो सकते हैं न?

**दादाश्री :** हो सकते हैं, काफी हद तक। सामायिक से तो पूरा निबेड़ा आ जाए। प्रतिक्रमण प्रज्ञा का काम है। इसलिए काफी बदलाव हो जाता है। और सामायिक में वह देखता है इसलिए धुल जाता है सब। जितने दोष दिखाई दिए उतने धुल जाते हैं।

### दुःख दिए, उसी के लिए प्रतिक्रमण

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक में तो आत्मा का ही काम है न?

**दादाश्री** : सीधा, डायरेक्ट।

**प्रश्नकर्ता** : प्रत्येक परमाणु को शुद्ध करने के लिए यह जो होता रहता है उसे हम देखा करें, ज्ञाता-दृष्टा की तरह तो शुद्ध हो जाते हैं या फिर प्रतिक्रमण करने से शुद्ध होते हैं?

**दादाश्री** : नहीं, नहीं, ज्ञाता-दृष्टा रहने से ही शुद्ध होते हैं।

**प्रश्नकर्ता** : तो प्रतिक्रमण से क्या होता है, दादा?

**दादाश्री** : प्रतिक्रमण से क्या होता है कि कोई बड़ा दोष जिससे सामनेवाले को दुःख पहुँचा हो, ऐसा हो गया हो तो हमें उसे (फाइल नं-१ को चंदू को) कहना पड़ता है कि 'चंदूभाई, ऐसा मत करो।' अतिक्रमण किया इसलिए आपको प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। यदि किसी को दुःख हो जाए, वैसा अतिक्रमण नहीं किया हो तो प्रतिक्रमण करने की जरूरत नहीं है।

**सामायिक में देखनेवाली, वह प्रज्ञा**

**प्रश्नकर्ता** : यह जो अक्रम में सामायिक करते हैं, उसमें जो पिछले सब दोष दिखाई देते हैं तो सामायिक में वह देखनेवाला कौन है, आत्मा या प्रज्ञा?

**दादाश्री** : प्रज्ञा, आत्मा की शक्ति है। जब तक संसार में आत्मा काम करे, तब तक वह प्रज्ञा कहलाती है। मूल आत्मा, स्वयं तो काम करता ही नहीं है, प्रज्ञा ही काम करती है। अतः वह आत्मा ही है सिर्फ। इसलिए पौने घंटे तक आत्मा ही बन गया। अब उसकी तो बात ही अलग है न!

**प्रश्नकर्ता** : आप कई बार सामायिक में बिठाकर त्रिमंत्र बोलने के लिए कहते हैं न कि पढ़ो 'नमो अरिहंताणम्' बोलकर, तो क्या उस समय

आत्मा ही पढ़ता है? और हम जो ये सत्संग की पुस्तकें पढ़ते हैं, आप्तवाणी पढ़ते हैं, उसे शुद्ध चित्त पढ़ता है और आत्मा जो पढ़ता है, वे दोनों एक सरीखा ही है क्या?

**दादाश्री** : आत्मा मूलतः जो पढ़ता है, वह अलग तरह का है। आत्मा कहने का हमारा भावार्थ क्या है? कि उसे इस मार्ग पर लाने के लिए कहते हैं। यहाँ पर इन्द्रियाँ नहीं है, ऐसा कहना चाहते हैं। लेकिन यह मूल आत्मा तो सब जानता है कि खुद की बुद्धि क्या कर रही है, मन क्या कर रहा है? उन सबको जानता है। वह भी वास्तव में मूल आत्मा नहीं है बल्कि अपनी प्रज्ञा है। वह मूल आत्मा की शक्ति कहलाती है। इसलिए सब जानती है वह यानी रिलेटिव-रियल कहा जाता है उसे।

**प्रश्नकर्ता** : रिलेटिव-रियल यानी क्या?

**दादाश्री** : रिलेटिव-रियल है (अर्थात्) रियल नहीं है एक्जेक्ट रिलेटिव रियल और रियल वस्तुएँ अविनाशी होती हैं सारी। यह गलत नहीं है लेकिन विनाशी रियल है।

**समभाव से निकाल, वह पहली सामायिक**

**प्रश्नकर्ता** : अपने प्रतिक्रमण और सामायिक में क्या कनेक्शन है?

**दादाश्री** : प्रतिक्रमण तो अतिक्रमण हुआ हो उसी का करना पड़ता है। आपका व्यवहार क्रमण है और ज़्यादा बोल दिया, वह अतिक्रमण है। तब आपको चंदूभाई से कहना है कि 'अतिक्रमण क्यों किया? इसलिए प्रतिक्रमण करो।' अतिक्रमण हो जाए, उस पर प्रतिक्रमण करवाना चाहिए।

सामायिक यानी 'मैं शुद्धात्मा हूँ', का भान, वह सामायिक है। पाँच आज्ञा में निरंतर सामायिक रहती है। समभाव से *निकाल* (निपटारा) करना वह पहली सामायिक। कुछ भी क्रिया नहीं करना,

हमारी तरह रहना, सहज स्वाभाविक, वह दूसरी सामायिक कहलाती है सहज दशा में, स्वभाविक रहना वह हमारे जैसी सामायिक। हमें निरंतर सामायिक रहती है। आप सबको रहता है क्या थोड़े समय के लिए भी, ऐसा सहज रहे वह निश्चय सामायिक और समभाव से निकाल करना, वह व्यवहार सामायिक।

आत्मा खुद ही सामायिक है। उसे समझोगे तभी समभाव रहेगा। वर्ल्ड में किसी को भी, एक क्षण के लिए भी समभाव नहीं रहता। हमारे ज्ञानी (महात्माएँ) निरंतर समभाव में ही रहते हैं।

### सहज-स्वाभाविक दशा वही सामायिक

**प्रश्नकर्ता** : समभाव यानी सामायिक, अब यदि समभाव में रह सकें तो फिर यह सामायिक करनी चाहिए?

**दादाश्री** : अरे! आत्मा ही सामायिक है। आपको यह ज्ञान प्राप्त हुआ और मेरी आज्ञा में रहो तो उसे पूरे दिन सामायिक कहलाती है।

और दूसरा, यह सामायिक करनी नहीं है। यह तो सिर्फ पिछले दोष धोने के लिए बड़ा प्रतिक्रमण है एक प्रकार का! इससे पहले जो दोष हो चुके हैं उन सबको धो डालना, उसे लोग सामायिक कहते हैं।

आत्मा प्राप्त होने के बाद पूरे दिन ही सामायिक में रहा जा सकता है!

**प्रश्नकर्ता** : दादा, आपको तो चौबीसों घंटें सामायिक ही रहती है न?

**दादाश्री** : हाँ, सामायिक तो रहती ही है। सामायिक तो स्वभाविक ही है न! क्योंकि आत्मा ही सम है और वह खुद ही सामायिक है। आत्मा स्वभाव में आ गया तो वह सामायिक ही है। लेकिन

ज्ञानीपुरुष में सामायिक से भी आगे है। उनमें दूसरे गुण, कई गुण प्रकट होते हैं, स्वभाविक गुण होते हैं।

चौबीसों घंटों में से एक क्षण के लिए भी हमारा संसार में उपयोग नहीं रहता। शुद्धात्मा के सिवा एक क्षण के लिए भी हमारा उपयोग और कहीं नहीं रहता। वह आपके देखने में आता है, इसलिए आपको एडजस्ट हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता** : क्या वही यथार्थ सामायिक है?

**दादाश्री** : वह आत्मा सामायिक है। हम निरंतर सामायिक में रहते हैं। क्या आपको ऐसा दिखा कभी? वह जो दिखे नहीं, उसी को सामायिक कहते हैं। जो दिखाई दे वह सामायिक नहीं। निरंतर आत्मा में रहना वही सामायिक है।

### सहज दशा सामायिक में

आप शुद्धात्मा बन गए तो प्रकृति साहजिक हो गई। साहजिक, वह तो अड़चन डाले ऐसी नहीं होती और साहजिक हो गई, इसलिए वह व्यवस्थित है। इसीलिए हम, आपको ऐसा नहीं कहते कि यदि तुझे खराब विचार आए तो तू ज़हर पी ले। अब तो यदि खराब विचार आया तो खराब को जानो और अच्छा विचार आया तो अच्छे को जानो। लेकिन यह सब अब विलय कैसे होगा? कुछ तो ऐसा है कि कंट्रोल में नहीं आता। आप कहते हो न, वह खत्म नहीं हो, ऐसी चीज़ है। उसका हमें कुछ उपाय करना पड़ेगा। कुछ तो एक घंटे तक बैठकर ज्ञाता-ज्ञेय के संबंध से विलय होंगे। जिस प्रकृति का विलय करना हो, वह इस तरह विलय होगी। अतः एक घंटा बैठकर और खुद ज्ञाता-दृष्टा बनकर उस चीज़ के सामने ज्ञेय के रूप में देखे तो वह प्रकृति धीरे-धीरे विलय होती रहेगी। अर्थात् सारी प्रकृति यहाँ खत्म हो जाए, ऐसा है। जब सामायिक करते हो, तब प्रकृति बिल्कुल सहज कहलाती है।

### दोषों के धुलते ही आनंद का अनुभव

अंदर आनंद होता है न, जब सामायिक प्रतिक्रमण करते हो उस वक्त? जैसे मुक्त हों ऐसा लगता है न?

**प्रश्नकर्ता :** यह जो चित्त भटकता था, मन जो विचार करता था, वह सब बंद हो जाता है, वहाँ रुक जाती हैं सभी चीजें।

**दादाश्री :** सबकुछ रुक जाता है। ऐसा है न कि आप अगर सेटिंग कर दो तो विषय दूर खड़ा रहे, ऐसा है बेचारा। वह तो घबराएगा बेचारा। जैसे अच्छे लोग यहाँ खड़े हो, उस समय हल्की जाति के लोग नहीं खड़े रहते, उस तरह।

इस सामायिक में तो दोष धुलते हैं। अभी तक के, ज्ञान प्राप्त होने से पहले जो दोष हो चुके हों उन्हें देखने की सामायिक है। कौन से दोष देखने हैं? ज्ञान लेने से पहले जो दोष हो चुके हों, उन्हें देखने से वे सब दोष धुल जाएँगे। अभी भी देखने से धुल जाएँगे। और याद करने जाएँ तो एक भी याद न आए। इस ज्ञान से दिखते हैं सभी। आत्मा हाज़िर होने से सब दिखता है। अंत तक का, पूरी लाइफ का दिखता है।

इस जगत् के लोग जो करते हैं, साधु लोग जो करते हैं, वैसी सामायिक नहीं। यह त्यागियों की सामायिक है। वह सामायिक ही नहीं कहलाती। भगवान की, वीतराग की सामायिक नहीं कहलाती। त्यागियों की और वीतरागों की सामायिक दोनों अलग होती हैं। त्यागियों की सामायिक अहंकार से की जाती है और वीतरागों की सामायिक निर्अहंकार से की जाती है।

इसलिए (हमें) यह प्रतिक्रमण करना है, (और वह) भी शुद्ध। इन लोगों के प्रतिक्रमण शुभाशुभ कहलाते हैं। बाहर के मच्छर घुस न जाएँ और मन की एकाग्रता का सेवन करना। (और) यह तो

शुद्धात्मा और एकाग्रता। और ऐसे एक से बढ़कर एक प्रतिक्रमण देखो तो सही! एक-एक की कीमत कितनी?

यह तो पुनिया श्रावक के सामायिक से भी उच्च। पुनिया श्रावक की सामायिक तो किसमें था? (क्रमिक मार्ग के सामायिक के वक्त) नवकार मंत्र और उन सबके ध्यान में ही सारा टाइम पूरा करते और उसे पढ़ते थे। जबकि (यहाँ) तो खुद के दोषों को देखता है। अरे! किसी जन्म में नहीं हुई है ऐसी सामायिक! कहाँ से होती? यह तो शुद्ध निर्भेल (मिलावट रहित) सामायिक है।

### कर्म क्षय होते हैं, सामायिक से

**प्रश्नकर्ता :** मेरा ऐसा अनुभव है कि सामायिक करने से जागृति बहुत बढ़ती है।

**दादाश्री :** हाँ, जागृति बहुत बढ़ जाती है। जागृति के लिए उसके जैसा कुछ भी नहीं है।

जैसे-जैसे जागृति बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उपशम हो चुके गुण (दोष) क्षय होते जाते हैं। इस जागृति का फायदा उठाना है। ये बाहर के कर्म उपशम हुए हों, वे सामायिक करने से क्षय होंगे। लेकिन फिर भी जब तक 'टेस्टेड' (परख) नहीं हो जाए, तब तक कुछ नहीं होगा। संसार में 'टेस्टिंग एक्ज़ामिनेशन' (परखने की परीक्षा) आना चाहिए।

### उद्दीरणा, अक्रम की सामायिक द्वारा

**प्रश्नकर्ता :** आपने जो कहा है न कि '(हम) कर्मों का नाश कर देते हैं,' तो जो संचित कर्म हैं, उनका क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** संचित कर्म तो समय होने पर अपने आप परिपक्व होंगे, तब अपने समक्ष आकर खड़े रहेंगे। हमें उन्हें ढूँढने जाने की जरूरत नहीं है। संचित कर्म अपना फल देकर चले जाएँगे। और जो

पुरुष (आत्मा) हो चुके हैं, वे अमुक (खास प्रकार के) योग करके अमुक कर्मों को खत्म कर सकते हैं, लेकिन वह पुरुष होने के बाद में ही।

**प्रश्नकर्ता:** उसे उद्दीरणा (भविष्य में फल देनेवाले कर्मों को समय से पहले जगाकर वर्तमान में खपाना) कहा जाता है?

**दादाश्री :** उद्दीरणा अर्थात् क्या? कच्चे फल को पकाकर झाड़ देना। यदि खिचड़ी कच्ची हो तो क्या करते हैं? वैसे ही, अगर कर्म का विपाक हुए बिना, कर्म कच्चे हों और जाने का समय हो जाए तो क्या करेंगे? इसलिए फिर उसे पका देते हैं। और उन कर्मों की उद्दीरणा होती है। लेकिन पुरुष होने के बाद ही यह पुरुषार्थ हो सकता है। पुरुषार्थ होने के बाद इतना अधिकार है उसे!

अपनी यह 'अक्रम' की 'सामायिक' आप करते हो, उसमें सभी कर्मों की उद्दीरणाएँ हो जाएँ, ऐसा है। हम लोग चरम शरीरी नहीं हैं, इसलिए जिन्हें ये कर्म रहने देने हों, वे रहने दें, लेकिन चरम शरीरी को तो उद्दीरणा करनी ही पड़ती है। क्योंकि उसे लगता है कि अब आयुष्य का अंत नज़दीक आ रहा है और दुकान में माल ढेर सारा पड़ा हुआ दिख रहा है! अब वह माल खपाए बिना किस तरह जाया जा सकेगा? एक तरफ मुद्दत पूरी हो रही है, इसलिए भगवान कुछ उपाय कीजिए। तब भगवान कहते हैं, 'कर्म का विपाक करो। विपाक यानी उसे पकाओ।' जैसे हम आम को घास में रखकर पकाते हैं न, वैसे ही कर्मों को आप पकाओ। तब वे उदय में आएँगे। उद्दीरणा अर्थात् कर्मों का उदय आने से पहले कर्मों को बुलाकर खपा देना।

उद्दीरणा का अर्थ क्या कि जो विपाक नहीं हुए हों, ऐसे कर्मों का विपाक करके उदय में लाना। जो चरम शरीरी हों, वे ला सकते हैं। यदि चरम शरीरी के कर्म अधिक हों, तो वह यह उद्दीरणा कर

सकता है। लेकिन वह कैसा होना चाहिए? सत्ताधीश होना चाहिए, पुरुषार्थ सहित होना चाहिए।

**उद्दीरणा, वह पुरुषार्थ है या तप?**

**प्रश्नकर्ता :** यह उद्दीरणा करते हैं न, वह खरा तप नहीं कहलाता?

**दादाश्री :** उद्दीरणा, वह तो पुरुषार्थ माना जाता है! लेकिन पुरुष होने के बाद का पुरुषार्थ है! वास्तव में तो यह पराक्रम में जाता है! वह बड़ा पराक्रम कहलाता है। पुरुषार्थ में तो खुद है ही लेकिन यह पराक्रम कहलाता है। सातवें गुंठाणे (४८ मिनट्स) के नीचे कोई कर नहीं सकता, यह पराक्रम भाव है!

निकाचित कर्म अर्थात् जो भुगतने ही पड़ें और बाकी सब कर्म ऐसे हैं जो खत्म हो सकें। जिसे उद्दीरणा कहते हैं, उसे तप कहें तो चल सकता है। वह तप भी नैमित्तिक तप है। यदि वह खुद कर सकता, तब तो वह कर्ता कहलाता। अर्थात् वह नैमित्तिक तप है। यानी कि उदय में तप आए तो वे कर्म खत्म हो जाते हैं, वर्ना वैसा होता नहीं। वह तप करने जाए कि कल करूँगा, तो वह नहीं हो पाएगा और ऐसे करते-करते अर्थी निकल जाएगी! और फिर किसी के कंधे पर चढ़कर जाना पड़ता है। उद्दीरणा नहीं हो सके, तो ऋण चुकाने आना पड़ेगा।

**आत्मस्वरूप होने पर, होता है पुरुषार्थ और पराक्रम**

आपसे इस ज्ञान के बाद अब सभी उद्दीरणाएँ हो सकती हैं! आपको बीस वर्ष बाद जो कर्म आनेवाले हों, तो आज आप वे सब भस्मभूत कर सकते हो!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वह किस तरह पता चलेगा कि बीस वर्ष बाद आनेवाला है?

**दादाश्री :** क्यों, वह गाँठ विलय हो गई तो

## दादावाणी

फिर खत्म, फिर तो 'एविडेन्स' (संयोग) इकट्ठे होंगे, बस उतना ही, लेकिन दुःखदायी नहीं रहा!

**प्रश्नकर्ता :** हम जो ये प्रतिक्रमण करते हैं, वह उद्दीरणा होती है न?

**दादाश्री :** उसमें उद्दीरणा ही होगी। क्योंकि आज अड़चन नहीं आई, फिर भी किसलिए कर रहा हूँ? वह मौजमजे के लिए नहीं है! फिर भी प्रतिक्रमण करते-करते जो आनंद होता है, वह लाभ अतिरिक्त है।

उद्दीरणा से दो लाभ होते हैं; एक तो उद्दीरणा करने के लिए आपको आत्मस्वरूप होना पड़ता है और दूसरा, कर्मों की उद्दीरणा होती है।

आत्मस्वरूप कब हो सकते हैं? जब सामायिक और कायोत्सर्ग दोनों हो जाएँ, तब आत्मस्वरूप हो सकते हैं। अपने यहाँ तो कायोत्सर्ग से बहुत ऊँची चीज़ है यह। अपने यहाँ तो सिर्फ सामायिक से ही आत्मस्वरूप हो जाते हैं, उससे उद्दीरणा हो जाती है। यह 'अक्रमज्ञान' है, इसलिए आप आत्मस्वरूप हो सकते हैं और तभी पुरुषार्थ और पराक्रम हो पाता है।

### कर्मों का निवारण, ज्ञाता-दृष्टा उपयोग से

**प्रश्नकर्ता :** दादा ने कहा है कि बर्फ जैसे कर्म अभी बाकी बचे हैं, वे कौन कौन से?

**दादाश्री :** हाँ, तीन प्रकार के कर्मों होते हैं। एक भाप के रूप में होते हैं, दूसरे पानी के रूप में होते हैं और तीसरे बर्फ के रूप में होते हैं। उनमें से भाप और पानी का हम नाश कर देते हैं। सिर्फ बर्फ ही हम से नष्ट नहीं हो सकता, उन्हें भुगतना ही पड़ेगा।

आपके पास यह जो बर्फ बचा है, उसका क्या करोगे फिर? मुझ से हो सका उतना कर दिया, फिर

आपके बर्फ के टुकड़े इतने बड़े-बड़े हों तो उसमें मैं क्या करूँ? तेरे टुकड़े छोटे हैं, यह तो बर्फ को रखे रखता है कि आइसक्रीम बनानी होगी तो काम आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** बर्फ जैसे कर्म हटाने का निवारण क्या है?

**दादाश्री :** उन्हें निकालने क्यों घूमते हो? उसका तो अपने आप निवारण हो ही रहा है, आपको ज्ञाता-दृष्टा रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा के मिलने से पहले जो बर्फ समान कर्म थे, अब वे सामायिक से कम हो जाएँगे न?

**दादाश्री :** कम हो जाएँगे।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वे बिल्कुल निर्मूल तो नहीं होंगे न ऐसे?

**दादाश्री :** नहीं। दिखाई देंगे और डराएँगे और फिर चले जाएँगे, डराएँगे भी सही। बाकी पेटी अपने आप खाली होती है। पेटी खाली हो जाने के बाद आप फिर अंदर ढूँढेंगे तो भी नहीं मिलेगा। कम नहीं होने लगे हैं क्या? कम होते जाएँगे, जैसे-जैसे टंकी खाली होती जाएगी न वैसे-वैसे।

**प्रश्नकर्ता :** हम जो ये प्रतिक्रमण करते हैं, प्रायश्चित्त करते हैं उनसे निकाचित कर्मों का भोगवटा (सुख या दुःख का असर भुगतना) हलका हो सकता है क्या?

**दादाश्री :** हलका हो सकता है न! निकाचित कर्म तो यह आत्मा का ज्ञान होगा, तो भी हलके लगेंगे। इस ज्ञान से सभी कर्म हलके लगते हैं। एक मन (मण, चालीस सेर का वजन) वजन का कर्म हो तो अज्ञानता के कारण तीन मन का लगता है और ज्ञान से दस रतल का लगता है, उतना फर्क पड़ जाता है।



**सर्वांगी जागृति भास्यमान परिणाम के सामने**

अब हमारे कितने ही (महात्मा) तो कदाचित् एकाध (सामायिक) करते होंगे, लेकिन ज़्यादा नहीं न? इसलिए हम कहते हैं कि चेतो। रोज़ तीन सामायिक तो करनी ही चाहिए। खुद जुदा (छुट्टा) ही हूँ तीन घंटे, तो ऐसा भान रहना ही चाहिए तब जाकर असंग वृत्ति होगी, वर्ना जॉइन्ट हो जाएगा वापस। 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ,' केवल ऐसा करते रहने से कुछ नहीं होगा। रोज़ तीन सामायिक करने पर संगी क्रियाओं में असंग वृत्ति का अनुभव होगा, वर्ना तो संग ही हो जाएगा।

'मन-वचन-काया की तमाम संगी क्रियाओं से मैं असंग हूँ।' यह शब्द बहुत बड़ा रखा गया है। कहते हैं, संसारी मनुष्य असंग कैसे कहा जा सकता है? अतः हमने यह साइन्टिफिकली प्रूफ (वैज्ञानिक प्रमाण) दिया। 'मन-वचन-काया-की तमाम संगी क्रियाओं से मैं बिल्कुल असंग ही हूँ।' अतः संगी क्रियाओं में असंग रहने के लिए कितनी जागृति चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** ज़बरदस्त जागृति चाहिए।

**दादाश्री :** असंग वृत्ति नहीं चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** चाहिए।

**दादाश्री :** मन-वचन-काया की तमाम संगी क्रियाओं से मैं बिल्कुल असंग हूँ। है ही असंग, लेकिन वे भास्यमान परिणाम बदल देते हैं उसे।

**प्रश्नकर्ता :** उसे अनुभव में आना चाहिए।

**दादाश्री :** हाँ, अनुभव में आना चाहिए और निर्बलताएँ चली जानी चाहिए। निर्बलताएँ कब जाएँगी कि जब खुद कुछ सामायिक वगैरह करता हो तब जाएँगी। इसलिए यदि इस बात को समझे तो बहुत बड़ा है। यदि इतने से ही, अभी कुछ भी नहीं किया उससे पहले ही इतना सब मिल गया है, तो यदि करे तो कैसी दशा उत्पन्न होगी!

**अद्भुत वातावरण, ज्ञानी की मौजूदगी में**

**प्रश्नकर्ता :** अपने जो ये प्रतिक्रमण और सामायिक करते हैं, उस समय दादा की हाज़िरी हो तो, यह जो अनुभव होता है वह हो जाएगा या यों भी हो सकता है?

**दादाश्री :** दादा की हाज़िरी हो तो ज़्यादा अच्छा होता है। बाहर का किसी का कुछ छूए नहीं और वातावरण बहुत ऊँचा होता है न! हमारी उपस्थिति हो न तो, उस उपस्थिति से वातावरण बहुत सुंदर हो जाता है और नहीं दिखाई दे रहा हो तो वह भी दिखता है। और मैं जो करता हूँ, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह भी पाँच-छः बार बोलता हूँ न, वह सब काम करता है। हमारे शब्द बहुत काम करते हैं। मैं बुलवाऊँगा तब भीतर सब जुदा हो जाएगा।

**सामायिक, आत्मा का विटामिन**

**प्रश्नकर्ता :** और उसके अलावा भी असर तो रहता है न, दादा न हों तब भी?

**दादाश्री :** कर सकते हैं, लेकिन अगर अकेले हों तो सारा जैसा होना चाहिए, वैसा नहीं हो पाता। ज़रा आगे-पीछे हो जाता है इतना ही। दो मिनट हो सके तो भी बहुत हो जाएगा! किसी को तुरंत ही असर होता है। अपने यहाँ पर जो सामायिक करवाते हैं न, वह बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। यह जो सामायिक है, वह आत्मा का विटामिन है। व्यवहार में यह विटामिन देह का लेना पड़ता है, ऐसा ही यह आत्मा का विटामिन है! और आपको तो पूरे दिन सामायिक, पूरी जिंदगी सामायिक ही रहती है। गाड़ी चलाते-चलाते भी रहती है या नहीं रहती? ऐसा होना चाहिए। आत्मा खुद ही सामायिक है। शक्तियाँ तो अनंत हैं लेकिन प्रकट नहीं हुई हैं।

**स्थिरता से बढ़े आत्मसुख**

**प्रश्नकर्ता :** आपकी गैरहाज़िरी में सामायिक में किससे आज्ञा लें?

## दादावाणी

**दादाश्री :** हमारी गैरहाज़िरी होती ही नहीं है, हम वहाँ हाज़िर ही होते हैं। और आपके वहाँ तो गैरहाज़िर रहते ही नहीं। आप तो बहुत सतर्क हैं, पक्के!

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक कम से कम कितने समय तक करनी चाहिए?

**दादाश्री :** कम से कम आठ मिनट और ज़्यादा से ज़्यादा पचास मिनट।

**प्रश्नकर्ता :** यह सुबह की सामायिक करते हैं, उसमें तो ५० मिनट के बाद सुख का उफान आता है।

**दादाश्री :** आएगा ही न! क्योंकि दिया हुआ आत्मा है और अचल आत्मा है। लोगों के पास तो चंचल आत्मा है और आप तो आत्मस्वरूप होकर सामायिक करते हो इसलिए गज़ब का आनंद आता है। जितनी ज़्यादा स्थिरता उत्पन्न होती है न, सुख उतना ही ज़्यादा आता है।

### शुरूआत करो इस ओर...

जब आप घर पर सामायिक करो तब पहले दादा का ध्यान लगाकर, स्मरण करके, एक-दो पद पढ़कर और फिर त्रिमंत्र बोलकर, फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की स्थिरता कर लेना। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वगैरह ऐसा यह सब मैंने जितना बुलवाया उतना बोलकर फिर शुरूआत करो इससे फिर भीतर शुरू हो जाएगा। हम ज्ञाता रहें और वह ज्ञेयरूप। फिर आज से लेकर बचपन तक की जो-जो घटनाएँ हुई हों, विषय-विकारी या हिंसा की घटनाएँ, झूठ-प्रपंच किए हों, वह सब जितना आपको दिखाई दे, उतने सभी के प्रतिक्रमण करने की शुरूआत आप करना। आज से पीछे की ओर चलना है, कल किस के साथ क्या किया था, परसों किस के साथ किया था, नरसों किस के साथ किया था,

अथवा बचपन से याद करना। वह जितना याद आए न उसके प्रतिक्रमण करने हैं? वह याद आएगा, कुदरती रूप से ही याद आएगा। आपको ऐसा घबरा नहीं जाना है कि याद नहीं आए तो क्या करेंगे? आप शुरू करोगे कि मूसलधार बरसात होगी! रेगिस्तान में भी बरसात होगी! और फिर जहाँ पर हिंसा जैसे दोष किए होंगे, अगर तो वाणी से हिंसा की होगी, या फिर कपट किए होंगे, कुछ लोभ किया होगा, मान किया होगा, धर्म में विराधना की होगी तो उन सबका प्रतिक्रमण करते-करते आगे जाना है। फिर अब्रह्मचर्य से संबंधित, अणहक्क (बिना हक का) के भोग भोगे हों या वैसा सोचा भी हो, उन सबको भी याद करके धोते रहना। जगत् जिसकी निंदा करे, जहाँ निंदा हो ऐसा हो उसके फलस्वरूप नर्क के अधिकारी बन जाते हैं! इसलिए उन सबका प्रतिक्रमण कर डालना।

### मिश्रचेतन का प्रतिक्रमण

यह चेतन वाणी है। यह चेतन वाणी ही काम करेगी। बैठकर शुद्धतापूर्वक प्रतिक्रमण शुरू कर दो। पाँच महाव्रत हैं, उन महाव्रतों का भंग कहाँ-कहाँ हुआ, उसी का करना है, और कुछ नहीं करना है। बाकी घूमे हों, फिरे हों, पान खाया हो, उसका नहीं करना है। मनुष्य को मनुष्य से आमने-सामने दोष हुए हों, उसके प्रतिक्रमण करने हैं। यानी मिश्रचेतन के प्रति जो दोष हुए हों, उन दोषों के लिए प्रतिक्रमण करने को कहता हूँ। यह 'दादा' की आज्ञा हुई है उसका पालन करना।

ऐसे तो रोज़ प्रतिक्रमण करते रहते हैं। किसी मिश्रचेतन के प्रति विषय का विचार आया हो, कोई दोष किए हों, उन सबको बचपन से लेकर अभी तक का याद कर-करके प्रतिक्रमण करना है। यह प्रतिक्रमण आज्ञासहित है, सो सब धुल जाएगा। इंसान से कौन सा आचार नहीं हो सकता? लेकिन आज्ञा का पालन किया तो स्वच्छ हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** मिश्रचेतन में क्या-क्या आता है ?

**दादाश्री :** मिश्रचेतन यानी यह कुत्ते को लात मारकर निकाल दिया हो, तो उसके साथ बैर बाँधा कहलाएगा। रास्ते पर किसी स्त्री को धक्का मारा हो, वह भी मिश्रचेतन के साथ दोष करना कहा जाएगा, वे सभी हर एक मिश्रचेतन के साथ के एक-एक दोष को याद करके, एक-एक दोष को खोजकर आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान करना। ज्ञानीपुरुष की आज्ञा में रहने से दोषों के ओपरेशन होते जाते हैं। यह तो 'लिफ्ट' मार्ग है। सो रस्ते चलते मार्ग मिल गया है न! अतः इस तरह आज्ञा में रहने से माल स्वच्छ होता जाएगा। ऐसा करते-करते मोक्ष जा पाओगे।

**दिखें सारे दोष सामायिक में**

**प्रश्नकर्ता :** भूलें पता नहीं चलें तो ?

**दादाश्री :** तो दादा को याद करके कहना, 'हे दादा भगवान, अब याद नहीं आ रहा है।' तो वापस याद आने लगेगा और जितने दोष दिखाई दिए उतने दोष खत्म हो जाएँगे। अब सुख खुद के भीतर शुरू हो गया है, लेकिन पूर्व के मिश्रचेतन के साथ के जो हिसाब बाकी होंगे वे दावा करेंगे। ऐसे मार खाकर-सीधा होने के बजाय मिश्रचेतन के साथ हुए दोषों की माफी ही माँगते रहो तो हल्के हो जाओगे। बेटे के साथ, पत्नी के साथ, फादर-मदर वगैरह वे सब मिश्रचेतन ही कहलाते हैं। उन सबके प्रतिक्रमण करने हैं। आज्ञा के पीछे ज्ञानीपुरुष का वचनबल काम करता है, अतः काम निकल जाता है।

अब अभी से देखते-देखते अंत में छोटी उम्र तक अंदर देखते रहो। देखते-देखते इस साल से, पिछले साल में, उससे पिछले साल में ऐसा करते-करते सब दिखेगा, अंत तक का। बचपन से अभी तक का देखना या फिर अभी से बचपन तक का देखना। किसी भी एक अभ्यास में आ जाना भीतर।

आत्मा द्वारा देखना भीतर, अटक जाए तो भी देखते रहना। तो दिखता जाएगा आगे। कई बार अंतराय नहीं होते और अगर किसी को हों तो अटक जाता है। जिसके अंतराय कम होंगे उसे सब दिखता जाएगा। छोटे थे ठेठ तब तक का सब दिखेगा, क्या-क्या किया वह सारा ही।

**चीकणी फाइलों के प्रतिक्रमण**

दूसरा, घर के लोगों के भी रोज़ प्रतिक्रमण करने चाहिए। तेरे मदर-फादर, भाई-बहन, परिजनों, सब का रोज़ ही प्रतिक्रमण करना पड़ेगा क्योंकि उनके साथ बहुत चीकणी फाइल (गाढ़ ऋणानुबंधवाले व्यक्ति) होती है।

यदि परिजनों के लिए एक घंटा प्रतिक्रमण करते हो न, अपने परिजनों को याद करके, सब नज़दीक से लेकर दूरवाले के सभी, उनके भाई, बहन, उनके चाचा-चाचियाँ के बेटे और वे सब, एक फैमिली (परिवार) हो न, तो दो-चार पीढ़ी तक का, उन सबको याद करके हर एक का एक घंटा प्रतिक्रमण हो न, तो भीतर अंदर भयंकर पाप भस्मीभूत हो जाएँगे और उन लोगों के मन स्वच्छ हो जाएँगे, अपनी तरफ से। अतः अपने नज़दीकवालों को सबको याद कर-करके (प्रतिक्रमण) करना है। और रात को नींद नहीं आती हो उस घड़ी अगर यह सेट कर दिया तो शुरू हो जाएगा। ऐसा सेट नहीं करते? ऐसी वह सेटिंग, वह फिल्म चालू हो गई तब तो उस घड़ी बहुत आनंद आएगा। वह आनंद समाएगा नहीं!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, सही बात है।

**दादाश्री :** क्योंकि जब प्रतिक्रमण करते हैं न तब आत्मा का संपूर्ण शुद्ध उपयोग रहता है। यानी बीच में किसी की दखल नहीं रहती।

प्रतिक्रमण कौन करता है? चंदूभाई करते हैं।

किसके लिए करते हैं? इन परिजनों को याद कर-करके करते हैं। आत्मा देखनेवाला है, वह देखता ही रहता है। दूसरी कुछ दखल है ही नहीं। इसलिए बहुत शुद्ध उपयोग रहता है।

### याद कर-करके करो, स्वच्छ

आज रात को प्रतिक्रमण करना न अपने सभी परिजनों के, टाइम कम पड़ जाए तो कल रात को करना। फिर भी कम पड़े तो परसों रात को, और वह इतने तक नहीं, अपने गाँव में जान-पहचानवाले हों उन सभी को याद करके प्रतिक्रमण करने चाहिए। गाँव में किसी को ज़रा ऐसे धक्का लग गया हो और किसी पर गुस्सा आया हो तो वह सब साफ तो करना पड़ेगा न? सब कागज़ साफ करने पड़ेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** कई सालों पहले हो चुका हो और वह हमें याद भी नहीं आ रहा हो तो?

**दादाश्री :** याद नहीं आए उसका क्या? वह तो रह गया ऐसे का ऐसा ही! फिर सामायिक करना, तो वह उसमें याद आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक में याद आएगा?

**दादाश्री :** हाँ, कितनों को तो पाँच वर्ष तक का सब याद आता है।

### प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान के साथ

अपने यहाँ प्रतिक्रमण करवाने के लिए बिठाते हैं, उसमें फिर क्या होता है? अंदर दो घंटे प्रतिक्रमण करवाते हैं न, कि बचपन से लेकर अभी तक सब जो जो दोष हुए हों, सभी को याद कर-करके प्रतिक्रमण कर डालो, सामनेवाले के शुद्धात्मा को देखकर, ऐसा कहते हैं। अब छोटी उम्र से, जब से समझ शक्ति की शुरूआत होती है, तभी से प्रतिक्रमण करने लगता है, तो अभी तक के प्रतिक्रमण करता

है। ऐसा प्रतिक्रमण करने से उसके सभी दोषों का बड़ा-बड़ा भाग आ जाता है। उसके बाद फिर से जब प्रतिक्रमण करे, तो उसमें छोटे-छोटे दोष भी आ जाते हैं। वापस फिर से प्रतिक्रमण करे तो उससे भी छोटे-छोटे दोष आ जाएँगे, इस तरह वह दोषों का पूरा भाग ही खत्म कर सकेगा।

एक घंटे के प्रतिक्रमण में सारी जिंदगी के पिछले चिपके हुए दोषों को धो डालना है और फिर से कभी भी ऐसे दोष नहीं करूँगा ऐसा निश्चय करना है, यानी कि प्रत्याख्यान हो गया।

### यह है जीवंत प्रतिक्रमण

अरे, अपने ये जो प्रतिक्रमण करते हो, वे तो बहुत कीमती हैं। उन्हें दो-दो, तीन-तीन घंटे तक तो जगत् याद ही नहीं रहता बिल्कुल भी और दोष ही दिखते रहते हैं, तीन-तीन घंटे तक!

दोष दिखें तो वे दोष चले जाते हैं। वह जीवित प्रतिक्रमण कहलाता है और वह (क्रमिक) तो निर्जीव प्रतिक्रमण कहलाता है। उससे पुण्य बंधता है। व्यर्थ नहीं जाता वह।

### दिखें खुद की भूलें सामायिक में

आप जब प्रतिक्रमण करने बैठते हो न, तो अमृत की बूंदें गिरती रहती हैं एक तरफ और हल्के हो गए हैं ऐसा लगता है। प्रतिक्रमण करने से तुझे भीतर ऐसा विश्वास बैठ गया न कि अब यह अनुभव अच्छा हुआ है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा। पहले कैसा था कि प्रतिक्रमण करूँ न, तो मुझे ऐसा ही लगता था कि मेरा दोष नहीं है और फिर क्यों झूठ-मूठ के प्रतिक्रमण करने?

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन अब?

**प्रश्नकर्ता :** अब समझ में आता है। क्या भूल

हैं समझ में आता है, पहले तो वह समझ में ही नहीं आता था। अब थोड़े समय से समझ में आने लगा है।

**दादाश्री :** अभी मूल भूल समझ में आएगी न, तब बहुत आनंद होगा प्रतिक्रमण से। कभी भी जब आनंद नहीं आए यानी प्रतिक्रमण करना नहीं आया। अतिक्रमण से यदि खुद को दुःख नहीं पहुँचे तो वह इंसान, इंसान नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** मूल भूल कौन सी है, दादा?

**दादाश्री :** पहले भूल दिखती ही नहीं थी न! अब जो दिख रही है, वह स्थूल दिख रही है। अभी तो आगे दिखेगी।

**प्रश्नकर्ता :** सूक्ष्म, सूक्ष्मतर...

**दादाश्री :** भूलें दिखती जाएँगी। यह तो मोटा खाता (स्थूल विभाग)। ऊपर का देह दिखा। भीतर कैसे हैं वह क्या पता चलेगा? इसलिए भीतर का देखे तब मूल भूल समझ में आती है।

#### तब उपाय, सामूहिक प्रतिक्रमण का

किसी के लिए भी अतिक्रमण हुए हों तो पूरे दिन उसके नाम के प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे, तभी खुद छूट जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** जब ऐसा कुछ रह जाए तो मन में बहुत होता रहता है कि यह रह गया।

**दादाश्री :** उसके लिए परेशानी नहीं करनी है फिर। बाद में एक दिन बैठकर एक साथ सब प्रतिक्रमण कर देना। जिस जिसके हों, जान पहचानवालों के, जिनके साथ ज़्यादा अतिक्रमण हो गया हो, उसका नाम लेकर एक घंटा कर दिया तो सब उड़ जाएगा फिर। लेकिन ऐसा हमें बोझा नहीं रखना है।

**प्रश्नकर्ता :** सुबह सामायिक में बैठते हैं, तो उसका आधा-पौना टाइम प्रतिक्रमण करने में ही चला जाता है।

**दादाश्री :** उस घड़ी ऐसा बोझा नहीं रखना है। पंद्रह दिनों बाद, महीने बाद जब करो न, बारह महीने बाद करो न, तो तब एक साथ कर लेना।

**प्रश्नकर्ता :** इस सामायिक-प्रतिक्रमण में दोषों को देखा और प्रतिक्रमण किया तो भी वे दोष भोगने तो पड़ेंगे न?

**दादाश्री :** नहीं, धुल जाते हैं। कई चीकणे (गाढ़) होते हैं वे रह जाते हैं। लेकिन वे कैसे रह जाते हैं, कि जैसे दीवार से चिपके हों ऐसे रहते हैं लेकिन वे ऐसे छूते ही उखड़ जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** भूल-चूक से प्रतिक्रमण करने रह जाएँ तो सामूहिक प्रतिक्रमण से निकल जाएगा?

**दादाश्री :** हाँ, उससे तो बहुत कुछ निकल जाता है। वह तो एक सबसे बड़ा रास्ता है कि बहुत दिनों की सिलक (पूँजी) इकट्ठी हो गई हो, तो वह एकदम से उड़ा देता है! बल्कि वह रास्ता अच्छा है!

#### गाँठों का विलय सामायिक द्वारा

**प्रश्नकर्ता :** यह तो अपने विज्ञान की बात है। हम अड़तालीस मिनट बैठकर करते हैं, वह। आपने इन गाँठों का विलय करने के लिए कहा था।

**दादाश्री :** वह तो अपना अक्रम विज्ञान है न! अतः स्थिर बैठकर गाँठों का नाश करने के लिए (यह सामायिक है)!

अपने यहाँ ये सब लोग जो 'सामायिक' करते हैं, उस सामायिक में उस विषय (दोषों, गाँठों) को रखकर ध्यान करे तो वह विषय विलय होता जाता है, खत्म हो जाता है। जो-जो आपको विलय कर देना हो, उसे यहाँ पर विलय किया जा सकता है।

आपको किसी जगह पर जीभ का स्वाद बाधक हो, तो वही विषय 'सामायिक' में रखना और जैसा

बताएँ उस अनुसार उसे देखते रहना है। सिर्फ देखने से ही वे सब गाँठें विलय हो जाएँगी।

विचार आए बिना कभी भी आकर्षण नहीं होता। आकर्षण होनेवाला हो, तब भीतर विचार आते हैं। विचार मन में से आते हैं, और मन गाँठों का बना हुआ है। जिसके विचार अधिक आएँ वह गाँठ बड़ी होती है। गाँठ जितनी बड़ी होती है, उसके ऊपर सामायिक करे तो गाँठ विलय हो जाती है।

**प्रश्नकर्ता :** गाँठ की, कषाय की नहीं न?

**दादाश्री :** (जीवित) कषाय तो रहे ही नहीं है न! कषाय पर तो सामायिक करनी ही नहीं है। कषाय तो (छूट) चुके हैं। (जीवित) कषाय तो रहे ही नहीं है, गाँठें शेष बची हैं। अतः जब उसके विचार आने लगे तो विचार, वह ज्ञेय हैं और हम ज्ञाता हैं। लेकिन विचार यदि अंदर धक्का मार रहे हों, जिस प्रकार पानी का प्रवाह बहुत तेज हो, तो ऊँगली रखने पर ऐसे हटा देगा, वह। उसी प्रकार यहाँ भी हमें पहचान लेना चाहिए कि वेग बहुत ज्यादा है। अतः उतना समय सामायिक द्वारा विलय कर दो। बाद में फोर्स हल्का हो जाएगा तब परेशानी नहीं रहेगी।

**प्रश्नकर्ता :** गाँठ जब फूटती है तो लगातार जोर चलता रहता है। इतना फोर्स होता है कि प्रतिक्रमण करने की कल्पना या विचार ही नहीं आ पाता। बाद में उसका प्रतिक्रमण होता है।

**दादाश्री :** सभी गाँठें वैसी नहीं होतीं। आपको समझ लेना चाहिए कि फलाँ गाँठ ऐसी ही है। आप जान लो कि यह नल ही दो इंच का है, और प्रवाह का फोर्स बहुत तेज है। कहेगा, यह मेरी ऊँगली स्थिर नहीं रह पाती, लेकिन अन्य सब जगह पर स्थिर रह सकती है। अतः हमें समझ लेना है कि यह नल ऐसे का ऐसा है अथवा अन्य नल ऐसा है। दो या तीन नलों को ही जानते हैं कि जो हमारे ऊँगली

रखने पर उसे हटा देता है। ऐसा फोर्स होता है उसका जबकि अन्य सभी नलों पर ऊँगली रखें, तो कोई परेशानी नहीं होती, इससे आप पहचान सकते हैं। कहीं सभी में थोड़े ही फोर्स होता है? वह तो कुछ नल में ही, एक-दो नल ही फोर्सवाले होते हैं। क्या सभी फोर्सवाले हैं?

**प्रश्नकर्ता :** एकाध, दो-तीन जगह पर बस।

**दादाश्री :** यदि सारे नल फोर्सवाले होंगे तो टंकी में बचेगा क्या? एक घंटे में तो पानी खत्म हो जाएगा। भाई की अर्थी निकल जाएगी, यदि सारे फोर्सवाले होंगे तो!

**भिन्न-भिन्न सामायिक द्वारा करो सब साफ**

**प्रश्नकर्ता :** हम सब इकत्रित होकर सामायिक करते हैं, तो उसमें हर बार क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** विषय विकारी दोषों का ज्यादा करना चाहिए। विकारी दोष यानी जो विकृत हो चुके हों, जो हमें भी खराब लगे और लोगों को भी खराब लगे। वो दिखाई देते हैं सारे। उल्टी-सीधी छेड़छाड़ की हो, फलाना (ऐसा-वैसा) किया हो, सब दिखेगा अंदर। पहले विषय का प्रतिक्रमण ले लो। तो उसके अंत तक जाएगा। उस विषय की गहराई तक जाओ। विषय कहाँ-कहाँ किए हैं, किस प्रकार से हुए हैं, उन विषय दोषों का *निकाल* कर डालो। ब्रह्मचर्य का सामायिक करने से अब्रह्मचर्य के परमाणु समाप्त हो जाते हैं। यदि इन विषयों की ग्रथियों का विलय हो जाए तो फिर विषय याद ही नहीं आएँगे। जब याद नहीं आएँगे तो फिर विषय कैसे करेगा? यह तो याद आने से विषय में गिरता है। फिर ऋणानुबंध पर लो। ऋणानुबंध यानी हमें जो-जो मिले हों, उन सबको याद करके प्रतिक्रमण करो।

फिर ऋणानुबंध पर लो। ऋणानुबंध यानी हमें जो-जो मिले हों, उन सबको याद करके प्रतिक्रमण

करो। फिर हिंसा से संबंधित दोष देखने से हिंसा के परमाणु खत्म हो जाएँगे। कहाँ पर छोटे जीवों को मारा, फल्लौं-फल्लौं जीवों को मारा, या फिर किसे दुःख दिया। इस प्रकार से हिंसा का निकाल कर डालो। हिंसा के सभी (दोषों) को भस्मीभूत कर डालो! फिर परसों झूठ का लो चौथे दिन चोरी का लो, फिर बाद में परिग्रह का लो।

यह सभी कर्मों को भस्मीभूत कर डालेगा। अगर इस ध्यान में आप लगे रहो न, तो आज तक किए हुए सभी दोषों को भस्मीभूत कर देगा। फिर आपका तो काम ही हो जाएगा न।

### हिंसा से संबंधित दोषों का पृथक्करण

**प्रश्नकर्ता :** हिंसा शब्द कौन सा? परिग्रह शब्द कौन सा? हिंसा का अर्थ हम सब अपनी भाषा में समझते हैं। इसलिए इसका बारिकी से ज़रा पृथक्करण करने की ज़रूरत है।

**दादाश्री :** हिंसा का अर्थ यहाँ तक का है कि यदि किसी का भी मन टूट जाए हम से, वह सब हिंसा ही कहलाती है। उस मन को दुःख हुआ उसे हिंसा नहीं कहते हम।

**प्रश्नकर्ता :** यानी सामनेवाले के मन को दुःख होता है, वह हिंसा में जाता है क्या?

**दादाश्री :** सब हिंसा ही कहलाती हैं वह। लेकिन इतना सब आपसे नहीं संभाला जाएगा, लेकिन फिर भी सामनेवाले का मन टूट न जाए उतनी हिंसा का ध्यान रखना।

**प्रश्नकर्ता :** यहाँ वह सामायिक में लेना है क्या? वह किस प्रकार से होता है?

**दादाश्री :** वह तो उसे दिखाई देगा वह व्यक्ति। फिर वापस प्रतिक्रमण वगैरह करके उसे एक तरफ रख देना है।

**प्रश्नकर्ता :** सामनेवाले का मन टूट जाए, और उसी का सामायिक हम करें और उस सामायिक में कुछ दिखा, उसके बाद करना क्या है?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण करो।

**प्रश्नकर्ता :** हमें प्रतिक्रमण करना है?

**दादाश्री :** टूट गया है इसलिए हमें ही प्रतिक्रमण करना पड़ेगा न! अपने कारण टूट गया वह। हमसे हिंसा हुई इसलिए वह हिंसा प्रतिक्रमण से बंद होकर (धुल) जाएगी।

**प्रश्नकर्ता :** हमारे कारण उसका मन टूट गया, वह क्या वापस जुड़ जाएगा प्रतिक्रमण करने से?

**दादाश्री :** जोड़ने की हमें कोई इच्छा नहीं है। जुड़े या न जुड़े वह अलग बात है लेकिन वह हिंसा हुई उसके एवज में उसका प्रतिक्रमण तो करना ही पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, हिंसा में और क्या-क्या आता है?

**दादाश्री :** द्रव्य हिंसाएँ, भाव हिंसाएँ जो कुछ भी हुई हों वे। क्रोध-मान-माया-लोभ, वे हिंसा कहलाती हैं। वे सब किए हों तो उनके प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे। कपट, वह बहुत बड़ी हिंसा मानी जाती है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी ये जो कपट करते हैं वह भी हिंसा मानी जाती है?

**दादाश्री :** हाँ, क्रोध-मान-माया-लोभ। कपट वह माया में आता है। माया यानी कपट।

**प्रश्नकर्ता :** तो क्रोध-मान-माया-लोभ सभी को हिंसा कहा न आपने? क्रोध भी हिंसा कहलाती है?



## दादावाणी

**दादाश्री :** क्रोध तो खुल्ली हिंसा है, ओपन हिंसा है वह तो।

**प्रश्नकर्ता :** मान? मान भी हिंसा में ही आता है?

**दादाश्री :** मान में क्रोध समाया हुआ ही है, तिरस्कार रहता ही है। मान का मतलब ही तिरस्कार। 'मैं कुछ हूँ,' मानकर फिर तिरस्कार करता है लोगों का।

**प्रश्नकर्ता :** मान यानी लोगों के प्रति तिरस्कार ही हुआ न पूरा!

**दादाश्री :** मान का मतलब ही तिरस्कार और अभिमानी तो बहुत तिरस्कार करता है।

### मान के दोषों की सामायिक

**प्रश्नकर्ता :** सामायिक में जो लेना है न, हिंसा, फिर विषय-विकार को सामायिक में लेना है, थोड़ी लोभ के बारे में बात निकली थी। लोभ पर भी अभी और डिटेल में (विस्तार से) पूछना था। और मान की सामायिक। वह मान जिस पर हमने कल बात की थी, वह बात हिंसा पर से निकली थी। और फिर मान का स्पष्टीकरण उस हिसाब से हुआ था लेकिन सामायिक में लेकर देखना है मान। प्रेक्टिकली जो मान उत्पन्न होता है प्रसंगोपात, उसे सामायिक में लेकर विलय करना है।

**दादाश्री :** अपना तो सब निकाली मान उत्पन्न हुआ है न! क्रमिकवालों का पूछ रहे हो क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, हम महात्माओं के लिए ही।

**दादाश्री :** वह (हमारा तो) निकाली मान है। और क्रमिकवालों के लिए होता है। उनके लिए चाहिए वह सब। वह वास्तविक (जीवित) मान होता है, वास्तविक (जीवित) क्रोध होता है, जीवित होता है वह सब। जबकि यह सब तो निर्जीव कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** निकाली है लेकिन प्रोब्लेम तो है ही न? खुद के आत्मा का टेस्ट नहीं आ पाता न?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं, कुछ नहीं, उसे देखते रहो।

**प्रश्नकर्ता :** वह देखें किस प्रकार से?

**दादाश्री :** लो, क्या होता है वह नहीं देख सकते? अभी विचार आए कि भाई, यह मगनभाई अच्छा आदमी नहीं है। ऐसा विचार आए तो वह भी देखा। और दूसरा विचार आया कि नगीन अच्छा है, उसे भी देखा। खराब काम करने का विचार आया, उसे भी देखा और अच्छा काम करने का विचार आए उसे भी देखा हमने।

### परिग्रह से संबंधित सामायिक

**प्रश्नकर्ता :** फिर वह जो परिग्रह के बारे में कहा न?

**दादाश्री :** परिग्रह तो जो हमें याद आता रहे, वही सब परिग्रह।

**प्रश्नकर्ता :** जो याद आता रहे वे सभी परिग्रह में आते हैं?

**दादाश्री :** बारह कमीज हों तेरे पास, तो तुझे पूछना पड़ेगा कि 'वह कहाँ गया? वह कहाँ गया? वह कहाँ गया?' नहीं पूछना पड़ेगा क्या? और यदि दो ही कमीज हों तो?

**प्रश्नकर्ता :** झंझट ही नहीं रहेगी।

**दादाश्री :** अगर वह कहे कि 'मिल नहीं रही है दूसरी।' तब हम समझ जाते हैं कि खो गया। चलो, दूसरा सिलवा लेंगे। लेकिन फिर 'वो वाली कहाँ गई?' तब कहता है, 'धोबी के यहाँ होगी। इधर कहीं होगी?' कदाचित् तो ससुराल में गया था वहाँ रह गई होगी? बारह कमीज सिलवाकर बैठ जाए। मैं दो ही कमीज सिलवाता था और एक कोट

## दादावाणी

सिलवाता था। जब कोट जर्जरित, ज़रा खराब होने लगे, तब दूसरा सिलवा लेता था, उसमें हर्ज नहीं। दूसरा एक लॉग कोट रख लिया था, कोई शादी वगैरह में जाना हो तो उसके लिए। यह कैसी गिनती करता है कि पूछना पड़ता है कि 'कहाँ गया मेरा वह कोट? यह कमीज़ कहाँ गई?' तब कहते हैं 'धोबी के यहाँ गया होगा या देव जानें कहाँ गया होगा?' वह फिर घपले में पड़ा, बाद में उसके लिए झंझट करना पड़ता है लेकिन यदि हो ही दो-तीन तो? नहीं मिल रहा? तब हम कहें कि गया, चलो। दूसरा सिलवा लो एक। जबकि वह तो मन में रहा करता है कि कहाँ गई होगी? कहाँ गई होगी?

**प्रश्नकर्ता :** याद करना पड़ता है उसे।

**दादाश्री :** हमें जितना याद करवाए, वे सब परिग्रह। मुझे कुछ भी याद नहीं करवाता। मेरा परिग्रह नहीं है। इस पोटली में क्या है? इस पोटली को मैंने देखा ही नहीं है। इस पोटली में क्या है, वह सब याद नहीं रहना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आप तो बेग को देखते ही नहीं हैं न? आपके बेग में क्या है? दो-दो, चार-चार साल तक देखते ही नहीं हैं।

**दादाश्री :** हाँ, वह तो पहले भी नहीं देखता था। ये तो आपके (नीरू बहन) आने के बाद, लेकिन पहले भी नहीं देखता था। पहले हीरा बा संभाल लिया करती थी। अंदर धोती नहीं मिल रही। मैंने कहा, 'गया, दूसरा ले आएँगे आज।' 'एक ना सौ दुःख को हरे।' मिल नहीं रहा तो गया, चलो पूरा हुआ। लेकिन यदि पाँच-आठ हो तो 'कहाँ गया, कहाँ गया करते रहेंगे?' तब वे पूछे 'कौन सा' तो कहते हैं 'वो हरी किनारीवाला।' तब वे कहें 'मुझे अब याद नहीं रहता। आपके कपड़े आप जानो।' अब हीरा बा को भला कैसे याद रहेगा? हरी किनारी और पीली किनारीवाला? ज़्यादा हो तो झंझट होगा

न? तब नीरू बहन कई बार कहती हैं, 'ऐसा सिलवाइए, वैसा सिलवाइए।' मैंने कहा, 'मत सिलवाइए। बोझा बढ़ेगा बल्कि उपाधि (बाहर से आनेवाला दुःख) बढ़ जाएगी। निरूपाधिवाले पुरुष को यह उपाधि बढ़ाकर क्या काम है?' हमें कोई परेशानी ही नहीं। कोई ज़रूरत ही नहीं न! सुबह ज़रा गेहूँ का दलिया बना दें तो बहुत हो गया। घी, वगैरह कुछ नहीं चाहिए, कोई ज़रूरत ही नहीं है न! झंझट ही नहीं है न! जिसे ज़रूरत हो उसे है वह सारा झंझट!

## लोभ की सामायिक

**प्रश्नकर्ता :** दादा, वह लोभ के बारे में रह गया, लोभ के प्रतिक्रमण....

**दादाश्री :** लोभ का तो मूल मालिक को भी पता नहीं चलता। इसलिए इसके जैसा भयंकर दोष कोई भी नहीं। मूल जो मालिक होता है न, उसे भी पता नहीं चलता है कि मुझ में लोभ है।

**प्रश्नकर्ता :** लोभी की मूल परिभाषा क्या है?

**दादाश्री :** लक्ष्मी का लोभ, मान का लोभ, सभी प्रकार का लोभ, हर एक चीज़ की उसे ज़्यादा से ज़्यादा ज़रूरत होती है। उसे मानना हो तो लोभ और कपट, ये राग में जाते हैं। और मान और क्रोध ये द्वेष में जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** इन सभी को सामायिक में लेना चाहिए न?

**दादाश्री :** हाँ, और 'वह' इन 'दादा' की कृपा है कि सामायिक में सारे ही दोष दिखाई देते हैं। छोटी उम्र तक का सब आपको दिखेगा और दोष दिखे यानी धुल जाएँगे और धुल जाएँ फिर भी वापस सबसे बड़ी गांठ पकड़कर रखनी है। उसे तो रोज़ सामायिक में लाना है। यानी ऐसे करते करते सामायिक करते जाओ।

## दादावाणी

सामायिक में तो खुद का जो दोष है, उसी को रख देना है> अहंकार हो तो अहंकार रख देना। विषयरस हो तो विषयरस को रख देना है, लोभ-लालच हो तो उसे रख देना, इन गाँठों को सामायिक में रख दी और उस गाँठ का ज्ञाता-द्रष्टा रहा तो वे विलय हो जाएँगी। और किसी तरीके से ये गाँठें खत्म हो ऐसा नहीं है। यह सामायिक इतनी आसान, सरल और सबसे उच्च चीज़ है! यहाँ एक बार सामायिक करके जाए तो फिर घर पर भी हो सकती है! यहाँ सबके साथ बैठकर करने से क्या होता है कि सभी का प्रभाव पड़ता है और बिल्कुल पद्धतिपूर्वक अच्छा हो जाता है! फिर आप घर पर करोगे तो चलता रहेगा।

### निर्ग्रथ होने पर आएगा समाधान

(आखिरकार) निर्ग्रथ बनना पड़ेगा। ज्ञानीपुरुष खुद निर्ग्रथ होते हैं, इसलिए जब भी उनका चेहरा देखो तब वैसा ही दिखता है और ग्रंथिवाले को देखो तो घर पर बैठा होता है और जब हम सभी सत्संगी

जाते हैं तब ऐसे करके बैठा हुआ होता है। 'अरे भाई, ऐसे क्यों कर रहा है?' तब कहता है, 'किसी विचार में फँस गया हूँ।' कोई ग्रंथि आए तो उसमें खो जाता है। ग्रंथि को पढ़ता रहता है और उसी में खो जाता है। इसलिए ग्रंथियों को विलय करने को कहा है। यानी ग्रंथि को सामायिक में लिया जाए तो विलय हो जाएँगी। ज्ञाता-ज्ञेय के संबंध से विलय हो जाएँगी ये सब। चाहे कैसी भी गाँठ हो, भले ही किसी की (कषाय की) भी हो, लेकिन खुद ज्ञाता और उसे ज्ञेय की तरह, रखने से वह गाँठ विलय होती जाएगी।

तरह-तरह की सभी गाँठें इस शरीर में पड़ी हुई हैं। जब ग्रंथियाँ निर्मूल होंगी, तब निर्ग्रथ बनेंगे। गाँठों को छेद-छेदकर निर्ग्रथ बनते हैं।

यह अलौकिक विज्ञान है! यह विज्ञान तो सारा काम निकाल दे ऐसा है। अब इसके लिए निकालें कुछ दिन।

- जय सच्चिदानंद

### प्राप्त कीजिए सत्संग अपडेट्स और आप्तसूत्र - दादा 'वोट्सअप' द्वारा

खुश खबर!!! अब से 'वोट्सअप' पर हररोज प्राप्त करें सुंदर चित्रों के साथ आप्तसूत्र, एनर्जाइज़र, भविष्य में होनेवाले पूज्य दीपकभाई के सत्संग कार्यक्रम की माहिती और दूसरा बहुत कुछ!

दादा भगवान फाउन्डेशन द्वारा प्रचलित इस वोट्सअप में जुड़ने के लिए आप अपने फोन की एड्रेस बुक में इस नंबर को डालें +91 79 39830955 और उसके बाद वोट्सअप से इस नंबर पर आपके नाम से मेसेज भेजें। उदाहरण के तौर पर अगर किसी का नाम चंदूलाल है तो इस तरह का मेसेज भेजना है - **Chandulal**

और आप बिल्कुल निश्चिंत रहना कि हमारे द्वारा आपका फोन नंबर किसी को भी नहीं दिया जाएगा। सिर्फ नये-नये अपडेट्स भेजने के लिए ही आपके फोन नंबर का उपयोग करेंगे, जो आपको आध्यात्मिक प्रगति करने में मददरूप होगा। ये अपडेट्स आप अपने मित्रों और स्वजनों को भी जरूर से भेजना।

### 'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महीने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या [dadavani@dadabhagwan.org](mailto:dadavani@dadabhagwan.org) इ-मेल आइडी पर इ-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

**१० जून** : पूज्य श्री का यू.एस, केनेडा सत्संग प्रवास के लिए न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी के एयरपोर्ट पर आगमन हुआ।

**१२ जून** : पूज्य श्री ने न्यू-जर्सी में होनेवाले त्रिमंदिर और सेन्टर के लिए जगह का अवलोकन किया। पूरी जगह का अवलोकन करके सारी जानकारी प्राप्त करने के बाद पूज्य श्री ने प्रार्थना-विधि की। उसके बाद नोर्थ-इस्ट के महात्माओं के संग डब्बा पार्टी का आयोजन किया गया। जिसमें विविध तरह की पचास खाद्य सामग्रियाँ परोसी गई थीं। शाम को हडसन रिवर पर लगभग ३३० महात्मा पूज्य श्री के साथ कूज में गए। वहाँ पर इन्फोर्मल सत्संग, दर्शन, भक्ति, और बच्चों द्वारा कार्यक्रम वगैरह हुए थे।

**१३-१६ जून** : न्यू जर्सी में हर साल की तरह इस साल भी मिनी गुरुपूर्णिमा जैसा वातावरण था। पहले दिन सिर्फ महात्माओं के लिए विशेष सत्संग हुआ था। दूसरे दिन विवाहित भाईओं तथा बहनों के लिए आप्तपुत्र-पुत्री द्वारा विशेष सत्संग हुआ। शाम को पूज्य श्री का सत्संग और रात को गरबा का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि में २४० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। चौथे दिन आप्तपुत्र द्वारा फोलोअप सत्संग का आयोजन हुआ। समग्र कार्यक्रम के दौरान लगभग १४०० महात्माओं ने भाग लिया था।

**१७-१९ जून** : न्यूयॉर्क में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि दौरान १३५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। लगभग १००० महात्मा-मुमुक्षुओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। आसपास के राज्यों से भी बहुत सारे महात्मा आए थे। खास तौर पर २० मुमुक्षु ब्राज़िल से ज्ञान लेने आए थे। सभी को इस कार्यक्रम दौरान विशेष आनंद की अनुभूति हुई थी।

**२१-२३ जून** : केनेडा के टोरेन्टो शहर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में १६० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और लगभग ८५० महात्मा-मुमुक्षुओं ने भाग लिया। महात्माओं के लिए विशेष सत्संग, गरबा तथा पिकनिक का आयोजन हुआ। २३ जून को ATN टी.वी. चैनल द्वारा पूज्य श्री का विशेष इन्टरव्यू लिया गया। नये महात्माओं के लिए आप्तपुत्र का फोलोअप सत्संग रखा गया।

**२४-२५ जून** : दिनांक २४ को एक दिवसीय पिकनिक फोटयार्गो पार्क (वाइन्डर) एटलान्टा में रखी गई, जिसमें साउथ-इस्ट सेन्टर के लगभग २७५ महात्माओं ने भाग लिया। नये महात्माओं को 'दादा दरबार' में पूज्य श्री से मिलने का और दर्शन का विशेष लाभ प्राप्त हुआ और उन्हें वीकली सत्संग में आने के लिए प्रोत्साहित किया गया। २५ जून को पूज्य श्री के साथ आयोजित सत्संग में प्राकृतिक दोषों में से बाहर निकलने के लिए महात्मा बहनों ने प्रश्न पूछे और पूज्य श्री के सानिध्य में समय बिताने का अवसर प्राप्त होने से सभी महात्मा बहुत आनंदित हो गए थे।

**२६-२७ जून** : अमेरिका के एटलान्टा शहर में पूज्य श्री के साथ अविवाहित युवकों का दो दिन की ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें युवकों ने पूज्य श्री के साथ सत्संग किया, हिस्ट्री म्यूज़ियम देखने गए और बोट राइडिंग भी की।

**२८-३० जून**: शारलोट में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में १५५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। इन्फोर्मल सेशन में आयोजित 'दादा दरबार' में स्थानिक महात्माओं को पूज्य से मिलने का और दर्शन का अमूल्य लाभ प्राप्त हुआ।

**३० जून - २ जुलाई** : अमेरिका के मिसिसीपी स्टेट के जेक्सन शहर में पहलीबार पूज्य श्री पधारे थे और सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में ८० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जेक्सन में नया सत्संग सेन्टर स्थापित हुआ। सभी महात्माओं के लिए यह अद्भुत और आनंददायक अनुभव था। नये ज्ञान प्राप्त महात्माओं के पास शेर करने जैसे कई पॉज़िटिव अनुभव थे।

**३-६ जुलाई** : डल्लास में पहले दिन सिर्फ महात्माओं के लिए सत्संग का आयोजन हुआ। पारिवारिक संबंध, बुद्धि, संस्कार वगैरह पर गहन प्रश्नोत्तरी हुई। दूसरे दिन महात्माओं को बगीचे में 'टी विथ पूज्य श्री' का मौका मिला। ज्ञानविधि में १५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और ५०० से अधिक महात्मा उपस्थित रहे। आखिरी दिन आप्तपुत्र द्वारा फोलोअप सत्संग का आयोजन हुआ, जिसका बड़ी संख्या में महात्माओं ने लाभ लिया।

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

<b>रायपुर</b>	दिनांक : 9 सितम्बर,	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 9329644433
<b>जालंधर</b>	दिनांक : 9-10 सितम्बर,	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 9814063043
<b>भिलाई</b>	दिनांक : 10-11 सितम्बर,	समय : शाम 5-30 से ८	संपर्क : 9827481336
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोडा वोटर टेन्क के पास, मैत्री गार्डन चौक.			
<b>मोहाली</b>	दिनांक : 11 सितम्बर,	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9872188973
स्थल : हाउस नंबर 138, सेक्टर 4, खरड़, मोहाली.			
<b>जलगाँव</b>	दिनांक : 11 सितम्बर,	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 9420942944
स्थल : ओमकार लोन, डी.एस.पी. चौक, एच.डी.एफ.सी. बैंक के सामने.			
<b>चंडीगढ़</b>	दिनांक : 12 सितम्बर,	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9872188973
स्थल : सनातन धर्म मंदिर धर्मशाला, सेक्टर 32-डी, चंडीगढ़.			
<b>नागपुर</b>	दिनांक : 12 सितम्बर,	समय : शाम 6-30 से 8-30	संपर्क : 9970059233
स्थल : कच्छी विसा ओसवाल समाज, छापूरु नगर, अनाथ विद्यालय के पास, लक्कडगंज, नागपुर.			
<b>औरंगाबाद</b>	दिनांक : 12 सितम्बर,	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 8308008897
<b>पूणे</b>	दिनांक : 13-14 सितम्बर,	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 9422660497
<b>अमरावती</b>	दिनांक : 14 सितम्बर,	समय : सुबह 10-30 से 1-00	संपर्क : 9403411471
स्थल : दोशी वाडी, गुलशन मार्केट के पास, जयस्तंभ चौक. संपर्क : 9422335982			
<b>दिल्ली</b>	दिनांक : 14 सितम्बर,	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 9810098564
<b>हैदराबाद</b>	दिनांक : 15-16 सितम्बर,	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 9989877786
<b>चेन्नई</b>	दिनांक : 18-19 सितम्बर,	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 9380159957
<b>भोपाल</b>	दिनांक : 19 सितम्बर,	समय : शाम 6 से 8-30	संपर्क : 9425024405
स्थल : जनक विहार कोम्प्लेक्स, एयरटेल ओफिस के सामने, मालवियानगर, भोपाल.			
<b>जलबपुर</b>	दिनांक : 20 सितम्बर,	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9425160428
स्थल : युथ होस्टेल, रानीताल चौक के पास.			
<b>बेंगलोर</b>	दिनांक : 20-21 सितम्बर,	समय और स्थल की जानकारी के लिए	संपर्क : 9590979099
<b>इन्दौर</b>	दिनांक : 21 सितम्बर,	समय : दोपहर 3-30 से 7	संपर्क : 9039936173
स्थल : ६३, कैलास मार्ग (पुराना धाधु भवन), डॉ. किशोर मीत्तल के पास, अंतिम चौराहे के पास.			

### ‘दादावाणी’ के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

## दादावाणी

### Atmagnani Pujya Deepakbhai's Australia-New Zealand Satsang Schedule - 2014

Date	Day	Session	From	To	Venue	Contact No. & Email
<b>AUSTRALIA SATSANG DETAILS</b>						
3-Oct	Fri	Satsang	7.30PM	9.30PM	Sydney Bahai Centre	+61 96260029
4-Oct	Sat	<b>GNAN VIDHI</b>	4.00PM	7.00PM	107 Derby St. Silverwater	+61 402179706
5-Oct	Sun	<b>Aptputra Satsang</b>	10.00AM	12.00PM	<b>NSW 2028, Australia</b>	+61 411146576
5-Oct	Sun	Satsang	4.30PM	6.30PM		
6-Oct	Mon	Small Simandhar Swami Bhagwan Pran-Pratishta. 9:30AM To 1:00PM				<a href="mailto:sydney.dadabagwan@gmail.com">sydney.dadabagwan@gmail.com</a>
<b>NEW ZEALAND SATSANG DETAILS</b>						
10-Oct	Fri	Satsang	7.00PM	9.00PM	Sri Shirdi Saibaba sansthan hall,	+64 9 9486119
11-Oct	Sat	<b>Aptputra Satsang</b>	10.30AM	12.30PM	12-18 Princess Street,	+64 21 2363348
11-Oct	Sat	<b>GNAN VIDHI</b>	5.00PM	8.00PM	<b>Onehunga, Auckland 1061</b>	+64 27 6939036

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
  - ✦ 'साधना' पर हररोज - सुबह ७-४० से ८-०५ (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' - बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ४ से ४-३० (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' - गुजरात-गिरनार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)
- Singapore**
- ✦ 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
- Australia**
- ✦ 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह १० से १०-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
- Dubai**
- ✦ 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह ३ से ३-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
  - ✦ 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर हर रोज दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
  - ✦ 'दूरदर्शन-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)
- USA**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
- USA-UK**
- ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा : ( दादा मंदिर ) 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

#### अडालज त्रिमंदिर

२२ से २९ अगस्त (शुक्र से शुक्र) पर्युषण पारायण - आप्तवाणी ३ तथा ७ पर वांचन-सत्संग-प्रश्नोत्तरी  
३० अगस्त (शनि) सुबह ९ बजे से - दर्शन का विशेष कार्यक्रम

पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-३ और ७ (गुजराती) किताबों का वांचन और उन पर सत्संग होगा। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते हैं।)

**सूचना :** १) यदि आप इस पारायण में भाग लेना चाहते हो, तो रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। अधिक जानकारी के लिए अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग के फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से शाम 7) पर संपर्क करें।  
२) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ।  
३) ओढ़ने-बीछाने का चदर, एयर पीलो साथ लाएँ। किसी भी प्रकार की कीमती चीजें साथ में न लाएँ।  
४) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

दि. २३ अक्टूबर (गुरु), रात ८ से १० - दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति

दि. २४ अक्टूबर (शुक्र), सुबह ८-३० से १ - नूतन वर्ष (वि.सं.२०७१) के अवसर पर दर्शन-पूजन-भक्ति

#### पाली

६ सितम्बर (शनि) - शाम ७ से ९-३० सत्संग तथा ७ सितम्बर (रवि), शाम ६-३० से ९-३० - ज्ञानविधि  
८ सितम्बर (सोम) - शाम ७ से ९-३० आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : अणुव्रत नगर, रामलीला मैदान के पास. संपर्क : 9252065202

#### कोलकाता

९-१० सितम्बर (मंगल-बुध) - शाम ६ से ८-३० सत्संग तथा ११ सितम्बर (गुरु), शाम ५-३० से ८-३० - ज्ञानविधि  
स्थल : विद्या मंदिर (हिन्दी हाईस्कूल), मीन्टो पार्क के पास, 1, मोईरा स्ट्रीट. संपर्क : 9830093230

#### पटना

१३ सितम्बर (शनि) - शाम ५-३० से ८ सत्संग तथा १४ सितम्बर (रवि), शाम ३-३० से ७ - ज्ञानविधि  
स्थल : रविन्द्र भवन, बीरचंद पटेल पथ, पटना सर्किट हाउस के सामने. संपर्क : 7352723132

१५ सितम्बर (सोम) - शाम ५-३० से ८ आप्तपुत्र सत्संग - I.M.A. हॉल, साऊथ इस्ट गांधी मैदान.

### परम पूज्य दादा भगवान का १०७वाँ जन्मजयंती महोत्सव

दि. ५ नवम्बर (बुध), शाम ५ बजे - महोत्सव शुभारंभ, रात ८ से १०-३० सत्संग

दि. ६ नवम्बर (गुरु), सुबह ८ से १, शाम ४-३० से ६-३० - जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति

दि. ७ नवम्बर (शुक्र), सुबह ९-३० से १२, रात ८ से १०-३० - सत्संग

दि. ८ नवम्बर (शनि), सुबह ९-३० से १२, रात ८ से १०-३० - सत्संग

दि. ९ नवम्बर (रवि), सुबह ९-३० से १२ - सत्संग तथा शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि

स्थल : रोटरी सर्कल, इफको कॉलोनी के पास, गांधीधाम-आदिपुर रोड. गांधीधाम (कच्छ). संपर्क : 9924348844



अगस्त २०१४  
वर्ष-९ अंक-१०  
अखंड क्रमांक - १०६

## दादावाणी

Date Of Publication On 15<sup>th</sup> Of Every Month  
RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014  
Valid up to 31-12-2014  
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012  
Valid up to 31-12-2014  
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1  
on 15th of each month.

ज्ञेय-ज्ञाता संबंध से विलय होती हैं गाँठें, सामायिक में गाँठें ( ग्रंथियाँ ) विलय करने के लिए यह सामायिक है। यानी कि अपना अक्रम का प्रतिक्रमण अलग तरह का होता है। क्रोध हो, मान हो या लोभ हो, इन सभी गाँठों को इसमें ( सामायिक में ) रख देना है। वे ज्ञेय हैं और हम ज्ञाता हैं, इस तरह अड़तालीस मिनट की सामायिक करनी है। ज्ञेय-ज्ञाता संबंध से ही सभी गाँठें विलय हो जाएँगी। जो गाँठ ज्यादा परेशान करती हो, जिसके बारे में बहुत विचार आते हों, वह गाँठ बड़ी होती है। कभी न कभी उन गाँठों को विलय तो करना पड़ेगा न! जितना विलय करेंगे उतना लाभ होगा, इसी जन्म में लाभ होगा! चाहे कैसी भी गाँठ हो, वह इस सामायिक से खत्म हो जाएगी! अब तो मोक्ष में जाना है, तो निर्ग्रथ होकर जाना पड़ेगा।

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.